RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

शिव आमंत्रण

आध्यात्म की नई उड़ान

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

04
जीवन की सभी समस्याओं का समाधान है एक... राजयोग

07 से 10

महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभ कामनाएं!

वर्ष • 07 | अंक • 02 | हिन्दी (मासिक) | फरवरी • 2020 | पृष्ठ • 16 | मूल्य • ₹ 9.50

मकान के छत पर किचन गार्डन बनाकर उगाई गई सब्जियां

ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग का नया प्रयोग, अब आप भी घर में उगा सकते हैं जैविक सब्जियां, छत को दे सकते हैं गार्डन का रूप

स्वस्थ जीवन का आधार

शाश्वत यौगिक किचन गार्डन

शिव आमंत्रण आबू रोड। हर परिवार की इच्छा होती है कि ताजा और जैविक सब्जियां मिलें। ऐसे में किचन गार्डन आपके लिए आशा की एक नई किरण है। इसके माध्यम से घर की छत पर ही ताजा और जैविक सब्जियां उगा सकते हैं, वह भी नाममात्र की लागत पर। ब्रह्माकुमारीज के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग में एक ऐसी ही नई तकनीक किचन गार्डन को देशी और जैविक तरीके से विकसित किया गया है। इसके अच्छे नतीजे सामने आए हैं। साथ ही घर में सब्जियां लगी होने से उन पर हम आसानी से राजयोग मेडिटेशन का प्रयोग कर सकते हैं। यदि आप भी हरियाली के शौकीन हैं और ताजा-शुद्ध सब्जियां चाहते हैं तो घर की गैलरी और छत को किचन गार्डन तकनीक से विकसित कर सकते हैं। ग्राम विकास प्रभाग ने किचन गार्डन को '**शाश्वत जैविक-यौगिक किचन गार्डन**' नाम दिया है। इसमें जैविक खाद के प्रयोग के साथ प्रतिदिन सुबह-शाम छत या गैलरी में लगी सब्जियों और फलों को सकारात्मक वायब्रेशन दिए जाते हैं। इससे जो भी सब्जियां पककर तैयार होती है तो वह ज्यादा पौष्टिक और गुणकारी हो जाती है।

शाश्वत जैविक-यौगिक किचन गार्डन तैयार करने की विधि...

मकान की छत और निर्माण के क्षेत्रफल के अनुसार प्लास्टिक की व्यवस्थानुरूप क्यारियां सिलाई करवाकर तैयार करना होता है। तैयार प्लास्टिक की क्यारियों में गाय के गोबर के मिश्रण और मिट्टी से 7 से 9 इंच तक भरना होता है। क्यारी में बरसात का अधिक पानी का निकास सहज होने के लिए साइड में छिद्र रखें। पौधे की सिंचाई फव्वारा सिंचाई या बूंद-बूंद सिंचाई की विधि का उपयोग करें। बीच-बीच में वर्मी कम्पोस्ट खाद व जीवामृत का प्रयोग करके मिट्टी को उपजाऊ बनाया जाता है।

किचन गार्डन से फायदे

- घर में हरियाली होने से शुद्ध ऑक्सीजन मिलती है व आसपास वातावरण स्वच्छ बना रहता है।
- हरियाली से गर्मी में घर का तापमान सम बना रहता है।
- शुद्ध, सात्विक सब्जियां मिलती हैं,इससे तन-मन स्वस्थ रहता है।
- शुद्ध सब्जी खाने से बीमारियों से बचे रहते हैं और बचत होती है।
- हमारे आसपास प्राकृतिक माहौल रहने से मन प्रसन्न रहता है और घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है, जो हमारी जीवन ऊर्जा को बढ़ाता है।

बीज संस्कार करके ही करें बुवाई...

जैविक-यौगिक किचन गार्डन की क्यारियों में बीज लगाने के पहले बीज संस्कार जरूरी है। इसके लिए बीजों को मेडिटेशन रूम में रखकर सकारात्मक वाइब्रेशन और परमात्मा से शक्ति लेकर चार्ज करते हैं। बीजों को अमृतवेला (ब्रह्ममुहूर्त) में योग के शुभ वाइब्रेशन से चार्ज किया जाता है। ताकि बीजों में शुद्ध, सकारात्मक और शक्तिशाली वाइब्रेशन के साथ अंकुरण हो। बीज संस्कार के बाद उन्हें जीवामृत से उपचारित करके बुवाई की जाती है। कीट व रोगों से नियंत्रण के लिए जैविक-प्राकृतिक औषधि जैसे- दशपर्णी अर्क, निमार्क, छाछ, गाय का दूध, गोमूत्र आदि की जानकारी के साथ स्प्रे करें। गार्डन के बीच में शिवध्वज लगाएं। हर घंटे शास्त्रीय संगीत व आध्यात्मिक गीत पौधों के बीच चलाएं। प्रतिदिन निश्चित समय पर किचन गार्डन में बैठकर परमात्म गुण शक्तियों का 5-10 मिनट शुभ वायब्रेशन फैलाएं। किसी भी स्थिति में रासायनिक खाद व कीटनाशक का उपयोग न करें।

ऐसे करें शाश्वत जैविक-यौगिक खेती

शाश्वत यौगिक खेती या शाश्वत जैविक-यौगिक किचन गार्डन शुरू करने के लिए पहले राजयोग सीखना जरूरी है। इसके लिए ब्रह्माकुमारीज संस्था के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की ओर से निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है। शाश्वत यौगिक खेती के लिए पुस्तक भी दो भाग - 1 व 2 में उपलब्ध है। यहां से प्रशिक्षण लेकर आज देशभर में दस हजार से भी अधिक किसान भाई जैविक-यौगिक पद्धति से खेती करके दोगुना मुनाफा कमा रहे हैं। कई जगह इसके आश्चर्यजनक परिणाम सामने आए हैं। राजयोग ब्रह्माकुमारीज के किसी भी सेवाकेंद्र पर सीख सकते हैं।

आज अगर किसी के पास जमीन जायदाद नहीं है तो बहुत कम खर्च में घर की छत पर गमलों में गोबर की खाद डालकर हरी-सब्जियां उगा सकता है। जो दैनिक दिनचर्या के लिए उपयोग किया जा सकता है। शाश्वत जैविक-यौगिक किचन गार्डन लगाने से घर का वातावरण भी बदलता है। हम जान सकते हैं कि हमारा प्रकृति से कितना प्यार है।

● बीके राजू, राष्ट्रीय संयोजक, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज

घर की सुंदरता के साथ शुद्ध हवा, सब्जियां और फल प्राप्त कर सकते हैं। सुबह-शाम उसमें थोड़ा ध्यान रखने से हमें बिना जहर की साग-सब्जियां उपलब्ध हो जाती हैं। यह हर एक को करना चाहिए। इसे न्यूट्री गार्डन का नाम दिया गया है।

● डॉ. प्रकाश, कृषि वैज्ञानिक, सिरोही, राजस्थान

शाश्वत-यौगिक किचन गार्डन अच्छी पहल है। घर में हरियाली होने से सकारात्मक वाइब्रेशन आते हैं। गर्मी में तापमान कम रहता है। शुद्ध सब्जियां मिलने से तन-मन तंदुरुस्त रहता है। जैविक-यौगिक खेती करने के लिए व्यक्ति को पहले निरोगी बनना पड़ता है।

● प्रहलाद, प्रयोगकर्ता, शाश्वत-यौगिक किचन गार्डन, टोंक, राजस्थान

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

नए वर्ष में हम सब पुरानी बातों से मुक्त हो जाएं

शिव आमंत्रण आबू रोड। संगमयुग पर हम सिर्फ बाबा को याद नहीं करते है परन्तु अपने आपको अच्छी तरह से जानते है। द्वापर से न अपने आपको जानते न बाप को जानते। हम जो ब्राह्मण बने है वह देवता बनेंगे। देवताओं में भी ऊंच पद पाने वाले है। बाप के बाद पद भी सिमरण है। अन्तकाल जो नारायण सिमरे तो ऊंच पद है ही। जिसके साथ प्यार होता है अन्त में उसका ही ख्याल आता है। भले और ज्ञान योग कितना भी हो परन्तु ख्याल अन्दर उसी का आता जो सिमरण है, बेहद की खुशी है, बेहद का नशा है। उस नशे में रहकर सेवा करेंगे तो अनेक आत्माओं को बाबा से शक्ति मिलेगी।

तो इस नये वर्ष में यहां से यही भावना धरके जाओ- सफल करो, सफलता पाओ, सफलतामूर्त बनो और सब पुरानी बातों से मुक्त हो जाओ। अभी हमको मुक्ति वर्ष मनाना है। जिसको बाबा ने जिस सेवा के निमित्त बनाया है। जो निमित्त बनी हुई आत्मा है वह बाबा के स्नेह के बंधन में बंधी हुई है और वही बंधन प्यारा है। वही बंधन सुख देता है। बाप ने हमको अपने प्यार के बंधन में बांध लिया है और सब बंधनों से मुक्त कर दिया है। तो दिल क्या कहती है? शुक्रिया बाबा आपका। हमें और कुछ सोचना ही नहीं है, बस एक बाबा से मिलन मनाना है और श्रीमत पर चलकर श्रेष्ठ पद पाना है। बुद्धिमानों की बुद्धि बैठा हुआ है वह सब आपेही करा लेगा। हमको जो ड्युटी दी है तुम मेरे होकर रहो, मैं तेरा हूं यह हम लोगों की लाईफ है। ऐसे सब अनुभव करें बाबा ने अपना बनाया मैं तेरा हूं तू मेरी हो। उसी जीवन से हमारी रक्षा है और शिक्षायें पालन करना आसान लगता है। मैं बाबा की हूं तो बाबा की शिक्षाओं के अनुकूल चलना अच्छा और सहज लगता है। शिक्षाओं पर चलने से जीवन में बल मिलता है। शिक्षाओं पर चलने से हमारी रक्षा होती आ रही है। बुद्धिमानों का बुद्धि औरों से काम कराता है, हमारी बुद्धि को अपने साथ जोड़ करके निश्चिंत बना देता है। निष्कामी बना देता है।

बाबा ने कहा जो जिसने जमा किया है उसका भी वर्णन मत करो। वह जाने खुदा जाने। कोई बाबा के बच्चे बनते हैं वह बाबा के डायरेक्ट अपना सम्बन्ध जोड़कर बाबा से सुख पायें, बाबा से वर्सा लें, हम दो के बीच में ख्यानत न डालें। बाबा ने कहा अभी वारिस कम निकलते हैं, इसका कारण भी हम है, हम अपने को बीच में मिला देते हैं। कई सोचते हैं इसको मैंने ज्ञान दिया, मैंने बाबा का बनाया, मेरा भी हक लगता है। यह संस्कार हमारे में होंगे तो उनके भी होंगे, वह कैसे वारिस बन सकते। किसको भी मैं और मेरापन से छुड़ाना, उनसे मुक्त करना यह हम सबका काम है। जैसे आदि रत्न मैं मेरेपन से फ्री है, अन्दर बाबा के संग का रंग लगा हुआ है। इसलिए बाबा स्मृति दिलाते-तुम रत्न हो औरों को शक्ति देने वाले हो। तो वह शक्ति तभी मिली है जब मैं और मेरेपन से फ्री हैं। हम किसी को भी ज्ञान दें, समझायें तो वह भी अपने को मुक्त महसूस करे, श्रीमत में अपनी मनमत मिक्स न करें, मेरा ही कहना मानो - नहीं तुमको जो बाबा के लिए प्रेरणा हो, अपने आप तुम बाबा को याद करो। तो निमित्त बनने वालों में जरा भी मेरापन न हो। मेरा पन है तो किसी को भी सुख दे नहीं सकते। मेरापन और मैं पन ही उसको दुख देता है। जो इन बातों से मुक्त है। वह सदा के लिए सुखी है। उसे कभी दुख महसूस नहीं हो सकता है।

परमात्मा पिता से संबंध जोड़कर बन जाते हैं स्वर्णिम दुनिया के मालिक

स्वर्णकार के नजरिए से परमात्मा पिता को परखते ही बन गया उनका वारिस: रमन

शिव आमंत्रण आबू रोड। व्यक्ति कितनी भी पूंजी एकत्रित कर ले लेकिन वह यह सोचे कि हम इसी कलियुग में स्वर्ग बसा लेंगे तो यह हो नहीं सकता। इस दुनिया में कोई सदा काल का सुखमय-शांतिमय हो नहीं सकता। लेकिन इसी दुनिया में अगर सुख-शांति पाना है तो हमें अपने जीवन में राजयोग को अपनाने की आवश्यकता है। क्योंकि दुनिया में यही एक मात्र उपाय है जो हमें हर परिस्थिति में सकारात्मकता की ओर अग्रसर करता है। इसी सीख को अपने जीवन में धारण करने वाले छपरा (बिहार) के राजीव रमन जो कि लखनऊ में एक सफल सोने-चांदी के व्यवसायी हैं।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा सिखाए गए राजयोग ने उनके जीवन के जीने का अंदाज ही बदल दिया है। उन्होंने अब अपने दिनचर्या में सकारात्मक बदलाव लाकर जीवन की अनेक पहेलियों को सुलझा लिया है। जानते हैं उनके इस सफर का सफलतम राज जो कि शिव आमंत्रण से बातचीत के दौरान उन्होंने साझा किया।

शख्सियत

सोच हो गई सकारात्मक

मैं सन् 1988 में व्यापार में आया। जब मैं व्यापार में आया, उस समय परमात्मा कि कृपा से हमारे घर में सम्पन्नता थी, न धन कि कमी, न कोई वस्तु कि कमी और न ही पैसे की कमी थी। मुझे लगता था कि यही सबसे सुखी जीवन है। मेरे जीवन में कोई कमी नहीं थी, परिवार के सभी लोग भी बहुत सुखी थे। मेरा विद्यार्थी जीवन भी काफी अच्छा रहा। मेरा लाईफ स्टाईल काफी मॉडर्न था। ऐसा लगता था कि स्वर्ग यही है। लेकिन जब मुझे आत्मा और परमात्मा का ज्ञान मिला और मैं बाबा का बना तो मेरे अन्दर काफी परिवर्तन आया। मेरा लाईफ स्टाईल चेन्ज हो गया, खाना-पीना भी सात्विक हो गया। मेरी सोच में भी सकारात्मक परिवर्तन आया।

तपस्या से हुआ जीवन परिवर्तन

ज्ञान में आने के बाद मेरा जीवन पहले से काफी खुशनुमा हो गया। मुझे ज्ञान में लाने में मेरी पत्नी का बहुत बड़ा योगदान है। हमारे घर में सबसे पहले मेरी पत्नी ज्ञान में चल रही थी। मुझे ज्ञान में लाने के लिए मेरी पत्नी को पांच साल तक योग और तपस्या करनी पड़ी, जिसके प्रभाव से उसने मुझे परिवर्तन कर दिया तब जाकर मुझे ब्रह्माकुमारीज का आध्यात्मिक ज्ञान समझ में आया।

मेरी पत्नी मेरे लिए मेरा फेवरेट पकवान शुद्ध और पवित्र होकर परमात्मा की याद में बनाती थी। परमात्मा को भोग स्वीकार कराकर फिर हम सबको खिलाती थी जिससे मेरा मन परिवर्तन हुआ।

मैं पहले बहुत ही गुस्सा करता था लेकिन मेरी पत्नी जब ब्रह्माकुमारीज सेन्टर जाने लगी तब उसके व्यवहार को देख कर मेरे अन्दर बहुत परिवर्तन आया। ज्ञान में आने से पहले मुझे बाहर का खाना खाने का बहुत शौक था।

आध्यात्मिक ज्ञान से बढ़ता है व्यापार

मेरा जन्म स्थल छपरा है, मेरा विद्यार्थी जीवनकाल पटना में बीता। छपरा में भी मेरा व्यापार था। मुझे ईश्वरीय ज्ञान लखनऊ में मिला। जब मेरे पिताजी बीमार थे, तब मैं ईलाज कराने के लिए लखनऊ में आया था। मेरे पिताजी को लीवर कि बीमारी थी। पिताजी की बीमारी काफी लम्बा समय चली, जिसके कारण मैंने अपना व्यापार लखनऊ में ही शुरू कर दिया। मैं लखनऊ में सोने-चाँदी का दुकान खोला, मेरा व्यापार दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। और मेरा सारा परिवार छपरा से लखनऊ में शिफ्ट हो गया। जब मैं अपना दुकान खोला तब पिताजी अपना पुराना शरीर त्याग आगे की यात्रा में चले गये।

परमात्मा पिता को परख लिया

मैं पूजापाठ बहुत करता था। मंदिर भी रोज जाता था। अपने जीवन में मैंने बहुत भक्ति की है। मंदिर में दान भी किया करता था और लोगों को मदद भी करता था। एक दिन मैं हनुमानजी के मंदिर गया था। कुछ दिनों बाद मेरे पास लखनऊ ब्रह्माकुमारीज सेन्टर से शिव जयन्ति का निमंत्रण आया, उस दिन मेरी पत्नी सेंटर जा रही थी, मैंने पूछा तो बोली ब्रह्माकुमारीज सेन्टर जा रही हूं। आज शिव जयंती है। जल्दी घर आ जाएगें । तो मैंने बोला हमें भी चलना है। जब मैं सेन्टर गया, दीदी ने हमें सेन्टर में देखा तो बहुत खुश हुई, मुझे भी बहुत अच्छा लग रहा था।

मेरी बेटी भी परमात्मा की बच्ची है वो हमेशा दीदी के साथ शिव की सेवा करती है। जब सेन्टर पर गये थे तो सेन्टर कि दीदी ने हमें कोर्स के लिए कहा और मेरी बेटी भी बोली पापा कोर्स कर लिजिए अच्छा लगेगा आपको। जब मेरी बेटी बोली तो मेरे को लगा कोर्स करना चाहिए।

9 मार्च 2015 को मेरा पहला कोर्स हुआ। कोर्स के दूसरे दिन से ही मेरे अन्दर परिवर्तन आना प्रारम्भ हो गया। आत्मा परमात्मा का रोल हमें समझ में आ गया, मैं कौन हूँ? परमात्मा कौन है? इस शरीर और आत्मा का इस सृष्टि चक्र पर क्या रोल है? हम देवता तुल्य कैसे बनेंगे, मेरा परमात्मा से क्या संबंध है? स्वर्णकार के नजरिए से परमात्मा पिता को परखते ही बन गया उनका वारिस।

परमात्म ज्ञान मिलते ही व्यर्थ खर्चों से मुक्त हो गया

ज्ञान से पहले बाहरी लोगों से मेरी दोस्ती बहुत थी, दोस्तों के साथ घूमने, पार्टी करने में बहुत सारे पैसे खर्च हो जाते थे। जब से परमात्मा का बच्चा बना तो जो भी दोस्त लोग थे या जो संग था सब छुटते चला गया, व्यर्थ जो खर्च होते थे वो पैसे बचने लगे और परमात्मा की सेवा में सफल होने लगा। लौकिक संग से निकालने में परमात्मा ने मेरी बहुत मदद की।

मेरा ससुराल कोलकता में है हमारे ससुराल में भी कारोबार सोना-चाँदी का है। पिताश्री ब्रह्माबाबा का जब कोलकता में सोने-चाँदि व हीरे का कारोबार करते थे और मेरे ससुराल में जो कारोबार था दोनों में लेनदेन होता था। हमारे जो पूर्वज है सब लोग सोने-चाँदी का ही व्यापार करते थे।

घर को बनाया शिवबाबा का सेंटर

कोर्स के कुछ दिन बाद मैं पूरे घर को अच्छे से सफाई किया। घर पर जो पुराने समान एवं बर्तन था सब को बाहर किया। घर को लहसुन, प्याज, नानवेज से मुक्त किया। फिर घर में नये बर्तन एवं समान लाया। मैं सेन्टर में पहला मुरली क्लास किया था उसमें एक वाक्य आया था लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फस्ट। हमें लगा किस तरह हम बाबा की सेवा में लास्ट से फस्ट आयें?

मैं रोज सेन्टर में मुरली क्लास करता हूँ और जो भी शिव की सेवा रहती है उसे दिल से प्यार से करता हूं। सेन्टर की दीदी जो भी सेवा के लिए बोलती है, सेवा के लिए एवररेडी रहता हूं। मैंने अपने घर को बाबा का सेन्टर बनाया, अपने घर को बहुत अच्छे से सजाया और पूरे घर को शिवमय कर दिया है। जब सेन्टर की दीदी मेरे घर पर आयी तो बहुत खुशी हुई।

बच्चा बन गया व्यर्थ बोल से मुक्त

सोनार का जो नजरिया या परखने की जो शक्ति होती है वो एक सोनार में होता है। डायमण्ड तब सही दिखता है जब एक आँख बंद करना पड़ता है, तब उसकी सही क्लियरटी समझ में आती है। एक आँख बंद करने का मतलब क्या हुआ? लाईफ में आगे बढ़ना है तो थोड़ा इग्नोर करो। उस चीज को इग्नोर करो जो हमारे जीवन में व्यर्थ है। अच्छी चीजों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए और व्यर्थ को इग्नोर करना चाहिए। पहले जब ज्ञान में नहीं था तो मैं व्यर्थ ज्यादा बोलता था तो मुझे बहुत गुस्सा आता था और बात आगे बढ़ जाती था। जब से परमपिता परमात्मा का बच्चा बना तो ये सारी व्यर्थ चीज अपने आप ही खत्म हो गई और जीवन सुख और शांति से भरपूर हो गया।

संपादकीय

विकारों की आहूति से मनाएं शिवरात्रि

सभी पर्वों की तरह शिवरात्रि का पर्व भी मानव हितकारी है। यदि हम अपने विकास, उन्नति और आध्यात्मिक सशक्तिकरण के उद्देश्य और नजरिए से देखेंगे तो निश्चित तौर पर यह मानव के लिए कल्याणकारी है। शिवरात्रि का अर्थ ही है अज्ञानता की रात्रि में कल्याणकारी रात्रि। जब इंसानियत मर जाती है तो वहां पर होने वाली हर एक घटना आसुरी कसौटी पर ही रहती है। ऐसे में मानव समाज कलंकित के अलावा इंसान के वेष में असुर हो जाता है। आज मनुष्य की स्थिति एकदम आसुरी लक्षणों के अनुरूप है। ऐसे वक्त में ही परमात्मा शिव का अवतरण होता है वे मनुष्य को नर से नारायण और नारी को लक्ष्मी समान बनाने की शिक्षा देते हैं। यही वह शिक्षा है जिससे व्यक्ति सामान्य मानव से श्रेष्ठ मानव की सीढ़ी चढ़ सकता है। वर्तमान परिदृश्य में यह जरूरी हो गया है कि हम अपने आप को जानें, पहचानें और फिर अपने को एक श्रेष्ठ इंसान बनाएं। सारी दुनिया आज विनाश के मुहाने पर खड़ी है। यदि समय रहते हमने अपने जीवन को ईश्वरीय शक्ति से भरपूर कर बदला नहीं तो समय दर्दनाक होगा। यही शिवरात्रि का महात्म्य है और संदेश भी है।

[मेरी कलम से]

बलजीत सिंह चहल
जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी (डीडीपीओ) जिला-फतेहाबाद, हरियाणा।

बुराइयों को मिटाता है राजयोग ज्ञान

ब्रह्माकुमारीज़ परिसर की सच्चाई-सफाई देख कर हम तो दंग रह गए। दो-चार लोगों के परिवार में तो हमेशा खिटपिट चलता रहता है लेकिन इतना बड़ा विशाल परिवार देखकर लगता है कि इसे चलाने में अवश्य ही उस परमात्मा पिता का ही हाथ और साथ है।

शिव आमंत्रण > हरियाणा।

जीवन का नाम है परिवर्तन और इस परिवर्तित जिन्दगी में इंसान के हर समय में बदलाव आते हैं। ऐसे ही मेरी खुशहाल जिन्दगी के अन्दर एक ऐसा बदलाव आया। जिसने मेरा जीवन ही बदल डाला। मेरा बड़ा बेटा हिन्दुस्तान की टॉप नाईंटी नाईन टी खड़गपुर से पास आउट हुआ था और एक अच्छी जॉब भी उसको लग गयी थी। अचानक यूनिवर्सिटी के बाहर मोटर सायकल की दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई। जिसकी वजह से मेरा जीवन ही पूरी तरह से बदल गया। कई कारण से मुझे ब्रह्माकुमारी संस्था आना पड़ा।

यहां आने के बाद मुझे इस सृष्टि चक्र के बारे में जानने की जिज्ञासा हुई और उसके राह पर चलने के लिए एक ऐसा इंस्टीट्यूट है जो सृष्टि चक्र का ज्ञान देता है। अन्तरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू आने के बाद मुझे शांति मिली। जीने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान का होना बहुत जरूरी है। खासकर मन जो है विचलित करता है उस पर लगाम लगाने के लिए आध्यात्म का होना बहुत जरूरी है।

मैं एक समाज से सम्बन्धित जिला का मुखिया हूं। जिसमें सबसे ज्यादा सामाजिक संस्थाएं जैसे पंचायत, जिला परिषद् आदि इन सभी के माध्यम से हमारे द्वारा समाज को सही दिशा में चलाया

> समाजिक बुराइयां आध्यात्म ज्ञान से दूर कर सकते हैं।

जा सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा नशा, मदिरा-पान जैसे और अन्य समाजिक बुराईयों को दूर किया जा सकता है।

अन्त में मैं लोगों को यही कहना चाहता हूं कि ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा भारत को विश्व गुरू बनाने का कार्य चल रहा है उससे निश्चित रूप से पूरे विश्व के मानस पटल पर हमारे भारत देश का नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। यहां ब्रह्माकुमारीज़ परिसर की सच्चाई-सफाई देख कर हम तो दंग रह गए कि दो-चार लोगों के परिवार में तो हमेशा खिटपिट चलती ही रहती है लेकिन यहां के इतने बड़े विशाल परिवार को देखकर लगता है कि, इसे चलाने में अवश्य ही उस परमात्मा पिता का ही हाथ और साथ है। जरूर यह परमात्मा पिता द्वारा सीखाये जा रहे राजयोग ज्ञान का ही कमाल है जिससे सारी बुराईयां मिट जाने वाली है।

[आध्यात्म की नई उड़ान]

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

राजयोग से चेतना इतनी ऊपर उठ जाती है कि कोई प्रश्न या समस्या नहीं बचती

आत्मिक शक्ति को निरंतर बढ़ाने के लिए मन की संकल्प शक्तियों को जितना हम श्रेष्ठतम विचारों से बढ़ाएंगे उतना ही मानसिक विकार, अनिद्रा, तनाव, अवसाद जैसे पीड़ाओं से मुक्त होते जाएंगे।

अपनी ऊर्जा को मूलाधार से ऊपर उठाकर सहस्त्रार तक पहुँचायें तो होगी परमानंद की अनुभूति

वैज्ञानिकों ने बहुत सारे संशोधन किए और सब ने माना ऐसे चक्र इस शरीर में है, परन्तु स्थूल शरीर में नहीं सूक्ष्म शरीर में है। ऐसे सात चक्र हैं। सबसे नीचे बताया मूलाधार, उसके ऊपर बताया स्वाधिष्ठान, उसके ऊपर बताया मणिपुर, उसके ऊपर बताया अनाहद, विशुद्ध, आज्ञा, और सहस्त्रार ऐसे ये सात चक्रों का वर्णन है। और उनका कहना है मनुष्य के अन्दर जो शक्ति है वो कुण्डली मारकर सबसे नीचे का जो चक्र है मूलाधार उसमें बैठी है। और योग के प्रयोग से साधना से, हठयोग से, मंत्र से या शक्तिपात से या गुरू कृपा से या परमात्मा की कृपा से इस शक्ति को जागृत किया जा सकता है। क्या वास्तव में चाहे स्थूल शरीर या वास्तविक शरीर, इसमें कोई ऐसी शक्तियां है, शायद नहीं फिर यह क्या है? भारत में जितने भी महान योगी हुए हैं, सबने इस कुण्डलीनी शक्ति की चर्चा की है। क्या है ये जागरण? क्या ऐसी कोई शक्ति है? कहा गया है, जब यह शक्ति जागृत हो जाती है तो मनुष्य कि चेतना इतनी ऊपर उठ जाती है कि जीवन में कोई प्रश्न नहीं रहता या कोई समस्या नहीं रहती। मानसिक कैद से मुक्त हो जाता है।

ओम् नमः शिवाय : ओम् अर्थात मैं आत्मा, नमः अर्थात नमस्कार करता हूँ, शिवाय अर्थात् शिव परमपिता परमात्मा को

शिवशंकर नाम के एक व्यक्ति ने अपने एक किताब में लिखा है -कि मैं 1974 में मैं बैठा था शिकागो में, स्वामी मुक्तानन्द आये थे भारत से जो कि कुण्डलीनी जागरण करते थे। बहुत बड़ी सभा थी और उन्होंने प्रवचन चालू किया और कहा आज का विषय है योग, उस गुरू ने कहा कि जैसे ही कहोगे ओम् नमः शिवाय, कुण्डली शक्ति तुम्हारे अन्दर नाचने लगेगी। और इतना ही मैंने सुना मैंने बोलना शुरू किया और बोलते बोलते ही ऐसा लगा एक शक्ति का प्रवाह उठ रहा है, जैसे कि एक प्रकाश का आलोक आ गया है, मैं उसमें नहा रहा हूँ। सारी चिंताएं, सारी समस्या एक दम से नष्ट हो गई। और उन्होंने लिखा ये पहला मुझे अनुभव हुआ। उसी तरह पश्चात् जगत के ईस्टमेन नाम के एक व्यक्ति ने योगा जनरल ने दो व्यक्तियों के नाम सुनाए है कि उनको भी इसी तरह का अनुभव हुआ। ऐसे बहुत सारे लोग हैं जिन्होंने ऐसे अनुभव सुनाए है। किसी-किसी को वो चक्र दिखे है, किसी को लाईट दिखे है किसी को कुछ दिखा है। ये सब भक्ति मार्ग और सन्यास मार्ग की बातें है। इसका ज्ञान में क्या अर्थ है? क्या वास्तव में ऐसे कोई कुण्डलीनी चक्र हो सकता है। वास्तव में ऐसा कोई कुण्डलीनी जागरण हो सकता है। कुण्डलिनी अर्थात् सर्प कुण्डलिनी, जो सांप कुण्डलिनी मारकर बैठता है अर्थात् वृत्ताकार ऑर्बिट, ऐसे सात चक्र बताये है। उन्होंने कहा है, ये चक्र सूक्ष्म शरीर में है स्थूल शरीर में नहीं है।

अपनी काम ऊर्जा को ओजस ऊर्जा में परिवर्तित कर सदा सुखी बनिए

वो योगी जिसकी शक्ति ऊपर चली जाती है उसको उर्ध्वमुखी योगी कहा है। जो काम ऊर्जा है वो रूपान्तरित हो जाती है, ओजस में परिवर्तित हो जाती है। उन्होंने कहा है दो नाड़ी है, इडा और पिंगला और बीच में है सुषुम्ना। जिसमें से ये ऊर्जा बहती है और ऊपर जाती है ब्रह्मरंध्र में और वहीं व्यक्ति का जागरण होता है। यह बातें शास्त्रों में, उपनिषदों में संसार के योगियों ने की है। वास्तव में बाबा ने कभी चक्रों की चर्चा नहीं कि परन्तु हाँ इन चक्रों का आध्यात्मिक अर्थ जरूर है। स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर दोनों में ये चक्र नहीं लेकिन ये मान लिया जाए आत्मा में ही ये सूक्ष्म बातें है, चक्रों के रूप में। और जैसे-जैसे हम आत्मा में ऊपर उठने लगेंगे, चेतना का आरोहन होगा, आरोहन अर्थात् चढ़ना उठना। जैसे पर्वतारोहण करते है, अश्वारोहण-घोड़े के ऊपर चढ़ना। उसी तरह ये शक्ति का आरोहन होता है जो शक्ति हमारे अन्दर छीपी हुई है, वो ऊपर उठने लगती है और हमारा मन शांत होता है, हमें परमानंद की अनुभूति होने लगती है।

बोध कथा
जीवन की सीख

हमारे मन के अंदर ही छुपी हुई हैं सारी शक्तियां

इंद्र लोक में देवताएं चर्चा कर रहे थे कि मनुष्य की सभी इच्छाएं, सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाए ऐसी शक्ति हमारे पास है और हम चाहते है इन शक्तियों को कहीं छिपाकर रखें। क्योंकि हम ये मनुष्य को दे दें तो शायद वो गलत प्रयोग करें। तो चर्चा चल रही थी कि इस शक्ति को कहां रखा जाए। एक देवता ने बताया इस शक्ति को समुद्र के नीचे छिपाकर रख दिया जाए। परन्तु दूसरों ने कहा, नहीं मनुष्य वहां भी पहुंच जाएगा। किसी ने कहा, ये जो चमत्कारी शक्तियां हैं इसको आसमान के ऊपर छिपा दिया जाए। परन्तु किसी ने कहा, वहां भी मनुष्य पहुंच जाएगा। किसी ने कहा किसी गुफा के अन्दर इसको छिपा दो। परन्तु सबने इसका विरोध किया। और अंततः एक देवता ने कहा, क्यों न हम मनुष्य की सारी इच्छाएं, सारी मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली इन शक्तियों को मनुष्य के मन के अन्दर ही छिपा दें। क्योंकि मनुष्य का स्वभाव है भटकना, वो भटकेगा-पहाड़ पर, वो भटकेगा समुद्र कि गहराईयों में, वो भटकेगा आसमान पर, परन्तु अपने मन की गहराई में नहीं जाता। इसलिए हमें इन सारी शक्तियों को मनुष्य के मन के अन्दर ही छिपा देनी चाहिए। तो उन देवताओं ने सारी शक्तियों को मनुष्य के अन्दर ही छिपा दिया। और मनुष्य शक्तिहीन हुआ, ढूंढते रहता है कहां-कहां है, इस शास्त्र में, इस जगह, उस जगह। कहीं तो मिल जाए परन्तु कहीं उसको मिलती नहीं। इसी शक्ति को भारत में कुण्डली शक्ति का नाम दिया गया है। आजतक की अव्यक्त वाणीयों में और साकार मुरलियों में या फिर किसी संदेश में बाबा ने इसकी कोई चर्चा नहीं की। परन्तु कहीं-कहीं एक शब्द आया है वो सन्यासी, वो लोग सातवीं मंजिल पर पहुंचते हैं। ये कुण्डली में क्या है, क्या वास्तव में ऐसा कोई चक्र है। क्या ऐसी कुछ नाड़ीयां है, क्या वास्तव में ऐसी कोई शक्ति है? नहीं, स्थूल शरीर में ऐसा कोई चक्र नहीं है। इस कुण्डलीनी शक्ति का वर्णन पहले उपनिषदों में आया, फिर तंत्र में आया, फिर बहुत सारे शास्त्रों में आया। संसार के असंख्य लोग है जिन्होंने इस तरह के वर्णन किए हैं।

संदेश: सच में हमारे अंदर की अनेक शक्तियां जो हमारे ही मन के अंदर छुपी हुई है जिसे हमें अंतर्मन से बाहर निकाल कर जीवन को शांतिमय और सुखमय बनाने में लगाना चाहिए।

प्रेरक विचार
Spiritual THOUGHTS

स्वामी दयानंद सरस्वती
आर्य समाज के संस्थापक

"दुनिया को अपना सर्वश्रेष्ठ देते रहिए और आपके पास उसका सर्वश्रेष्ठ रिजल्ट लौटकर आएगा"

छत्रपति शिवाजी महाराज
मराठा साम्राज्य शासक

"जब आपके हौसले बुलंद होंगे तो पहाड़ जैसी विपत्ति और संघर्ष भी मिट्टी के ढेर के समान ही प्रतीत होगा।"

[बी.के. शिवानी]

जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ
अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज की टीवी होस्ट
गुरुग्राम, हरियाणा

जीवन प्रबंधन

जीवन की सभी समस्याओं का समाधान है एक... राजयोग

> आत्मा की सात क्वालिटीज है प्योरिटी, पीस, पावर, लव, हैप्पीनेस, नौलेज, आनंद। उनका जितना इस्तेमाल करेंगे उतना वायुमण्डल खुशनुमा बनता जाएगा।

शिव आमंत्रण > आबू रोड। हमेशा सकारात्मक सोच रखें तो जीवन खुशियों से भर जाएगा। वातावरण में दुःख है, दर्द है कौन सी वायब्रेशन भेजनी चाहिए उस आत्मा को आप एक सेकण्ड के लिए विजुलाइज करेंगे। एक आत्मा ने बहुत कुछ देखा है शरीर छोड़ने से पहले, उस आत्मा को इस टाईम कौन सी चीज की जरूरत है, क्या चाहिए उसको? लव चाहिए, पीस चाहिए, शक्ति चाहिए, हीलिंग चाहिए। हमसे किस-किस ने एक मिनट बैठ कर वो किया। एक मिनट भी न्यूजपेपर पढ़ा, न्यूज सुनी, बार-बार सुना, बहुत कुछ बोला उसके बारे में, बहुत कुछ लिखा उसके बारे में लेकिन एक मिनट भी बैठकर, उस आत्मा को याद करके, परमात्मा से कनेक्ट होकर उस आत्मा को प्यार, लव, पीसफुल हीलिंग दी। ताकी वो आत्मा आगे की जर्नी पर कैसे जाए, वो नहीं दिया। सबने क्या क्रियेट किया इस टाईम सिर्फ जो बात है उसको क्या करना है आगे, यह किसी को मालूम नहीं है लेकिन लोग बहुत ही निगेटिव क्रियेट करते है।

आत्मा के सातों गुणों को इमर्ज रखो तो पांच विकारों से मुक्त हो जाएंगे

दूसरी बात इस दुनिया में पाँच विकार है काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। आत्मा की सात क्वालिटीज है प्युरिटी, पीस, पावर, लव, हैप्पीनेस, नौलेज, आनंद। पाँच विकार है, सात गुण है। जितना हम इन पाँच विकारों को यूज कर रहे है अपने जीवन में अपने-अपने रूप से यूज कर रहे हैं। उतना हमारी इस हवा के अन्दर, इस सृष्टि के अन्दर वायब्रेशन क्रियेट हो रही है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। अगर हम कुछ भी ऐसा सुनते, कुछ भी ऐसा पढ़ते है, कुछ भी ऐसा देखते है, कुछ भी ऐसा करते है। जिससे लस्ट की वायब्रेशन क्रियेट कर रहे है, हम हवा को दूषित करते है।

पवित्रता को अपने जीवन में धारण करो तो काम विकार से मुक्ति मिल जाएगी

आज अगर हम ये प्रतिज्ञा करें कि मेरे अन्दर एक भी सोच काम विकार के नहीं आ सकती। मेरे अन्दर के हर सोच सिर्फ प्युरिटी के होंगे, पवित्रता के होंगी, तब हम अपना कॉन्ट्रीब्युशन कर रहे है। हमें इस हवा को क्या करना है? इस हवा को प्योर बनाना है, जब हम सब मिलकर इस हवा को प्योर बनाएंगे तो किसी के मन में दूषित सोच आयेगी भी तो वो वातावरण के प्युरिटी से क्या हो जाएगी, खत्म हो जाएगी। लेकिन हम सब काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की सोच क्रियेट करेंगे तो हवा में कौन सी वायब्रेशन है वही वायब्रेशन है। तो किसी की सोच में थोड़ा भी मैल आया और हवा वैसी ही मैली है तो कर्म में आना, जो हुआ उसके प्रति निंदा करके, बोल के हमारी जिम्मेवारी पूरी नहीं होती है, हमारी जिम्मेवारी तब शुरू होती है जब हम इस हवा से काम विकार को खत्म करने के लिए रेडी है। समाज में बढ़ते बलात्कार को रोकने का एकमात्र तरीका है राजयोग का अभ्यास ही है।

न बुरा देखो, न बुरा सुनो, न बुरा सोचो, न बुरा बोलो और न किसी का बुरा करो

आज से हम प्रतिज्ञा करें, ना कभी ऐसी चीज सुनेंगे, न कभी ऐसी मूवी देखेंगे, न कोई ऐसा सीन देखेंगे, न कोई ऐसा वीडियो देखेंगे, न ऐसा सोचेंगे न बोलेंगे, सिर्फ पवित्र सोचेंगे, तब तो हमने किया ना चीजों को बदलने को बदलने के लिए, सिर्फ हमारे बोलने से विश्व नहीं बदल सकता है। हमारे शोर मचाने से विश्व नहीं बदल सकता है। ये सृष्टि किसने क्रियेट कि है ये दुनिया किसने क्रियेट की है, अगर हम चाहे काम विकार के सारे कर्म खत्म हो जाए तो इस सृष्टि से, हमें मन चित्त से इस विकार को खत्म करना होगा। अगर हम चाहे टेरर के कर्म सब खत्म हो जाये इस सृष्टि से, हमें इस चित्त से क्रोध के विकार को खत्म करना होगा, अगर हम चाहते है इस सृष्टि से करप्शन खत्म हो जाए तो इस सृष्टि से तो हमें लोभ के विकार को खत्म करना होगा। ये सब हमारी क्रियेशन है, पॉल्युशन एक ने नहीं हम सब ने मिलकर क्रियेट की है। और साफ भी कौन करेगा? हम सब मिलकर करेंगे।

विकारों का करें त्याग, सृष्टि बनेगी स्वर्ग

इस कलियुग को किसने बनाया? पाँच विकार किसने क्रियेट किया है? कुछ समय पहले मैं दिल्ली शहर से आयी। हवा दूषित है, बहुत लोग बीमार पड़ रहे है, बहुत लोग हॉस्पिटल में है आज, छोटे-छोटे बच्चे बीमार हो रहे है। लेकिन ये हवा को दूषित किसने किया? हम सबने किया है, अपने-अपने कर्मों से लेकिन बीमार कुछ लोग हुए है, लेकिन दूषित सबने किया था। साफ भी कौन करेगा, हम सबको करना पड़ेगा। जब कोई ऐसा कर्म करता है वो बीमार व्यक्ति है, लेकिन बीमार व्यक्ति में हवा को किसने दूषित किया उसमें हम सब शामिल है। हमें अपने कर्म को बदल के, अपने संस्कारों को बदल के, सृष्टि के वायब्रेशन को चेन्ज करना है। आज हमें एक योगदान दीजिए, काम विकार को हटाईए, जीवन में प्युरिटी को लेकर आईये। अगर आपके योगदान से सृष्टि पवित्र हो जाएगी हरेक का चित्त पवित्र हो जाएगा, इतनी पावर हमारी वायब्रेशन में है। लेकिन प्रश्न ये है क्या हम ये करने के लिए तैयार है? जैसे इस हॉल का वायब्रेशन हजार लोगो से बनता है वैसी सृष्टि की वायब्रेशन हमारी एनर्जी से बनती है।

> इस कलियुग को किसने बनाया? हवा को दूषित किसने किया? उसमें हम सब शामिल हैं। तो अपने कर्म को बदल कर अपने संस्कारों को बदलकर, सृष्टि के वायब्रेशन को चैंज करना है।

जीवन का मनोविज्ञान
भाग - 20

[डॉ. अजय शुक्ला]

बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटलेक्चुअल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बढ़ावी, देवास, म.प्र.)

पारदर्शी जीवन तथा यथार्थवादी स्वरूप का सामाजिक परिदृश्य

शिव आमंत्रण > आबू रोड। मानवीय संबंधों में लोक व्यवहार की स्वीकारोक्ति व्यक्ति के यथार्थवादी स्वरूप का वह गरिमामयी सबल पक्ष है, जिसमें पारदर्शी जीवन की सत्यता एवं पवित्रता सन्निहित रहती है। व्यक्तिगत जीवन में समाजवादी व्यवहार की परिकल्पना जब साकार होने लगती है, तब मानवता के प्रति विश्वसनीयता का जागरण अपने शक्तिशाली रूप में परिलक्षित होता है। ईमानदारी के साथ जीवन को गतिशील करने का यथार्थवादी स्वरूप इतना विराट होता है कि उसमें सामाजिक जीवन की पारदर्शिता स्वमेव बनी रहती है। जीवन में संवेदनशीलता की अभिवृद्धि इस बात का प्रमाण है कि व्यक्ति साम्यवादी व्यवहार के अनुपालन में स्वयं की पूर्णता को अनुभूति के स्तर पर जीना चाहता है । आत्मिक दृष्टि की पवित्रता से सृष्टि के परिवर्तन की अभिलाषा मनुष्य को आध्यात्मवादी व्यवहार की ओर खींच लाती है।

मानवता द्वारा सुख, शांति, आनंद की स्थापना

सृष्टि पर प्राणी मात्र का उद्देश्य सुख- शांति एवं आनंद की प्राप्ति है। इसके लिए मानवतावादी दृष्टिकोण का विकसित स्वरूप ज्ञानार्जन के प्रति आस्था उत्पन्न करने में सहायक होता है । जीवन में उदारवादी प्रवृत्ति होने से कई गुणों को एक साथ आचरण में उतारने के लिए आंतरिक अभिप्रेरणा प्राप्त होती है। इसके आधार से एक मनुष्य सम्पूर्ण जीवन काल में मनुष्यता का जतन करता रहता है। स्वयं को प्रेमपूर्ण तरीके से समझाते हुए आत्मा की पवित्रता को जीवन में स्वीकार कर लेना एक शक्तिशाली व्यक्ति की निशानी है। जिसे सूक्ष्म जगत के जीवन मूल्य द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। पारदर्शी जीवन का यथार्थवादी स्वरूप सामाजिक परिदृश्य में मानवता को स्थापित करने के लिए भागीरथ प्रयास करता है, ताकि जीवन को सुख-शांति के साथ आनंदमयी अवस्था को बनाए रखा जा सके। जीवन की उच्च स्थिति को बनाए रखने के लिए मानवीय मूल्यों का रूपांतरण अन्तःकरण को शुद्ध कर देता है।

आत्मिक संबंध की जीवंत परिणीति का यथार्थ

सामाजिक परिदृश्य के अंतर्गत मानवीय व्यवहार और उनके संबंधों में प्राय व्यक्ति की भावना, अपेक्षा एवं मानसिक स्तर के अनुसार स्वयं को ढालते हुए एक-दूसरे को संतुष्ट करके निभाने का सफलतम प्रयास किया जाता है। स्व-संवाद का जादू जहां आत्म सुझाव को निजी जीवन में अपनाने पर बल देता है वहीं 'पहले तोलो फिर बोलो' की उक्ति को चरितार्थ करने की सुदृढ़ स्थिति को निर्मित करके मधुर एवं जीवंत सबंधों की संरचना करता है। आत्मिक संबंध की यथार्थ परिणिति व्यक्तिगत जीवनशैली मंशा समभाव को लोक-व्यवहार से इस प्रकार जोड़ देती है कि पारदर्शी स्वरूप का क्रियान्वयन सम्भव हो जाता है। जीवन की व्यापकता जब आध्यात्मवाद के सिद्धांत से स्वयं को आबद्ध कर लेती है, तब आत्मिक समृद्धि का मार्ग आनंददायी स्वरूप को उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जीवन में आत्मवाद का संरक्षण एवं संवर्धन

आत्मिक स्वरूप के महान स्थायित्व को निरंतर बनाए रखने की मंशा स्वयं की श्रेष्ठ अवस्था के लिए सदा राजयोग व मौन के अभ्यास से आनंद की प्राप्ति को जीवन का पवित्र आधार मानती है। मानव की गरिमा को जब दुर्लभ संयोग के रूप में स्वीकार किया जाता है, तब जीवात्मा की उच्च स्थिति के लिए परमसत्ता की स्मृति का बोध अध्यात्म एवं पुरुषार्थ द्वारा सुनिश्चित होता है। जीवन में आत्मवाद का संरक्षण व संवर्धन उस समय निर्धारित हो पाता है जब व्यक्ति धर्म-कर्म से यह आत्मज्ञान प्राप्त कर लेता है कि स्वयं के उत्थान के लिए जिज्ञासु प्रवृत्ति के साथ समझने, सीखने एवं अनुभव करने की दिशा से स्वयं को सदैव सम्बद्ध रखना आवश्यक है। अंतर्मन द्वारा व्यक्ति और उससे जुड़ी घटनाएं, मानसिक ऊहापोह से उत्पन्न विचार तथा विचित्र रूप से हृदय में बैठी भावनाओं से उबरने पर ही जीवन की यथार्थता प्रकट होती है। मनोवैज्ञानिक अनुसंधान से जुड़े अध्ययन बताते हैं कि व्यक्ति एवं वस्तुवाद, पूंजी और उसके साम्राज्यवाद तथा भौतिकता के विस्तारवाद से मुक्त होकर ही आत्मवाद को सुरक्षित किया जा सकता है ।

सूचना

आध्यात्मिक सेवाओं एवं आत्मिक सशक्तिकरण के उद्देश्य से प्रकाशित शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का सहयोग अपेक्षित है, सभी सदस्यता आमंत्रित है।
वार्षिक शुल्क 110 रुपए
तीन वर्ष 330
आजीवन 2500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक : ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज शिव आमंत्रण ऑफिस,
शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही,
राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो. 9414172596, 9413384884
Email : shivamantran@bkivv.org

वंडर्स ऑफ BRAHMAKUMARIS

इस कॉलम में हम आपको हर बार ब्रह्माकुमारीज संस्थान एवं भाई-बहनों को मिले पुरस्कार या सम्मान से रुबरू कराएंगे। इस बार आप जानेंगे ऊर्जा संरक्षण अवार्ड से किया ब्रह्माकुमारीज को सम्मानित......

राजस्थान सरकार ने ब्रह्माकुमारीज़ को ऊर्जा संरक्षण अवार्ड से नवाजा

अवार्ड लेते ब्रह्माकुमारीज के मुख्य अभियंता बीके भरत।

शिव आमंत्रण > जयपुर। ब्रह्माकुमारीज संस्थान को उर्जा संरक्षण के क्षेत्र में किए गये विशिष्ट योगदान के लिए राजस्थान सरकार के उर्जा विभाग से ब्रह्माकुमारीज संस्थान को उर्जा संरक्षण अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह अवार्ड राजस्थान सरकार के उर्जा विभाग के विशेष सचिव पुंजी लाल मीणा ने जयपुर में आयोजित एक समारोह में ब्रह्माकुमारीज संस्था के मुख्य अभियन्ता तथा सोशल एक्टिविटी ग्रुप के अध्यक्ष बीके भरत को प्रदान किया। गौरतलब हो कि कुछ महीने पूर्व पूरे राजस्थान में म्हारो राजस्थान समृद्ध राजस्थान अभियान चलाया गया था। जिसमें कई मुद्दों सहित उर्जा संरक्षण पर जागरूकता अभियान चलाया गया था। जिसमें पूरे राजस्थान के गांवों गांवों में अनेक प्रकार के कार्यक्रम कर लोगों को जागरूक किया गया था। इस सन्दर्भ में प्रवृत्तियां राजस्थान सरकार को प्रस्तुत की गयी थी जिसके तहत राजस्थान सरकार के उर्जा विभाग ने यह अवार्ड दिया।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान को जल प्रहरी अवार्ड

बीके पारी को जल प्रहरी अवार्ड प्रदान करते अतिथि।

शिव आमंत्रण > आबूरोड। जल संरक्षण क्षेत्र में किए गये उल्लेखनीय कार्यों के लिए ब्रह्माकुमारीज संस्थान को भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय द्वारा जल प्रहरी अवार्ड से नवाजा गया। यह अवार्ड दिल्ली में आयोजित एक समारोह में दिया गया। कान्स्टीट्यूशन क्लब दिल्ली के आयोजित कार्यक्रम में जल शक्ति मंत्रालय के सचिव यूपी सिंह, आरएसएस के सह प्रमुख रामलाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजू ने यह अवार्ड ब्रह्माकुमारीज संस्थान के जल विभाग के बीके पारी को प्रदान किया। इस समारोह में देशभर से जल संरक्षण करने वाले लोगों को भी प्रदान किया गया। बीके पारी ने बताया, कि इस अवसर पर जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए भी अतिथियों ने प्रोत्साहित किया। गौरतलब है कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान पिछले कुछ वर्षों से जल संरक्षण के लिए विशेष जागरूकता अभियान चला रही है। साथ ही राजस्थान में म्हारो राजस्थान समृद्ध राजस्थान अभियान के दौरान पूरे राजस्थान में हजारों कार्यक्रम आयोजित कर जल संचय एवं संरक्षण के लिए प्रेरित किया गया। जिसकी उपलब्धियों को देखते हुए यह अवार्ड दिया गया है।

अगले अंक में आप जानेंगे संस्था की अन्य उपलब्धियों के बारे में.. पढ़ते रहिए **शिव आमंत्रण**।

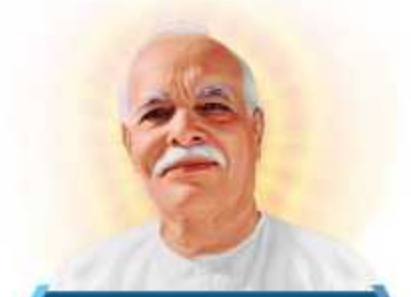

रियल लाइफ

[प्रजापिता ब्रह्मा बाबा]

संस्थापक
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

विदेही अवस्था का अनुभव और श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण का साक्षात्कार

रियल लाइफ कॉलम में हम आपको प्रत्येक अंक में बताएंगे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मार्ग में क्या बाधाएं आईं और उनका सामना ब्रह्मा बाबा ने कितनी सरलता से किया.... जीवन को पलटाने वाली अद्भुत जीवन कहानी पुस्तक से क्रमशः...

मैं परीक्षाओं को पार कर, लौकिक माताजी के साथ वापस अपने यज्ञ में पहुंच गई। हमारी लौकिक माता को वहाँ ज्ञान का और अधिक स्पष्टीकरण दिया गया। अभी उन्हें आए दो दिन ही हुए थे कि एक अनुभव के कारण उन्हें अत्यन्त हर्ष हुआ। बात यह थी कि यज्ञ में एक माता थी जिन्हें हम ध्यानेश्वरी अथवा ध्यानी कहते थे। वह एक बहुत ही योगयुक्त माता थी। उन्होंने हमारी लौकिक माता को सामने बिठा कर ईश्वरीय ज्ञान सुनाया। वह पहला ही पाठ पढ़ा रही थी और इस प्रकार कह रही थी कि ''तुम एक अनादि-अविनाशी आत्मा हो। तुम शरीर नहीं हो। भूल जाओ अपनी इस देह को। देह में आने के कारण ही तुम्हें मनोविकारों ने घेर लिया है। जब तुम विकारों को छोड़कर निर्विकार बनोगी तो सतयुगी सुखधाम में चल सकोगी ....।'' इस प्रकार समझाते-समझाते उन्होंने लौकिक माता से पूछा कि आपके शरीर का नाम क्या है?
वह बोली -''मेरे शरीर का नाम लक्ष्मी है।''

ध्यानी जी बोली- ''है! तुम्हारा नाम लक्ष्मी है? पहले तुम साक्षात् लक्ष्मी थी परन्तु अब तुम अपने स्वरूप को भूल गई हो। क्या अपने नाम को सुनकर भी तुम्हें अपनी वह स्थिति याद नहीं आती? तुम लक्ष्मी से कुलक्ष्मी क्यों बनी हो? अब सच्ची-सच्ची लक्ष्मी बनो। देखो, तुम पहले निर्विकारी थी। अब तुम आत्मा विकारी बन गई हो। अब फिर लक्ष्मी बनो। जागो,जागो, अपने स्वरूप को पहचानो और फिर से लक्ष्मी बनो.....।''

हो गया दिव्य साक्षात्कार

इन शब्दों को सुनते-सुनते लौकिक माताजी ने विदेह अवस्था का अनुभव किया और उस अशरीरी अवस्था में स्थित होते-होते झट से उनको दिव्य साक्षात्कार हो गया। यह उनके पूर्वजन्मों की भक्ति का फल समझ लीजिए। उन्होंने देखा कि क्षीर सागर के बीच सोने का एक राजमहल है। उसमें एक दरबार है। दरबार में सर्वांग सुन्दरी श्री लक्ष्मी और सर्वांग सुन्दर श्री नारायण विराजमान हैं।''
लौकिक माता जी ने हमें यह अनुभव सुनाया और कहा कि - ''मेरा मन करता था कि मैं उस दरबार के अन्दर चली जाऊं। परन्तु मुझे ऐसा करने का साहस नहीं होता था क्योंकि यह संकल्प उठता था कि मैं अपावन और विकारी हूं।''
इस साक्षात्कार के कारण उन्हें इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में विश्वास हो गया। अब उन्हें वहाँ ठहरे एक सप्ताह हो चुका था। उन्होंने आजीवन वहीं रहने की इच्छा प्रगट की। वे बोली - ''अब मैं यहीं रहूंगी। यहाँ का वातावरण बहुत ही सात्विक है, आत्मा को बहुत शान्ति मिलती है।'' परन्तु उन्हें वहाँ अधिक ठहरने की स्वीकृति नहीं मिली क्योंकि पिता-श्री ने हमें समझाया कि ''आप लोगों पर तो अत्याचार करके आपको घर से निकाल दिया गया था वरना घर छोड़ने की क्या जरूरत थी। आप तो छोटी होने के कारण इन्हीं लोगों पर आश्रित थी और ये लोग आपको सहयोग नहीं देते थे। तभी तो आपको यहाँ आना पड़ा। परन्तु यह तो घर में बड़ी है। इनकी बात तो घर में चल सकती है। अतः इन्हें चाहिए कि यह वहाँ जाकर दूसरों को भी ज्ञान दें तथा घर को आश्रम बनायें।'' यह सुनकर माता जी घर में अच्छा वातावरण बनाये रखने का लक्ष्य लेकर चली गईं।

एक और अनुभव

इस विषय में ब्रह्माकुमारीज हृदयपुष्पा जी ने अपना जो अनुभव व्यक्त किया, उसका सार इस प्रकार है-
''हमारे लौकिक माता-पिता अपने कर्म-बन्धन को पूरा करने के लिए कुछ समय के लिए हैदराबाद में पहुँची तो हम ऐसा अनुभव कर रही थी जैसे कि हम शक्तियाँ परमपिता परमात्मा का सन्देश देने के लिए ऊपर से इस पराये देश में उतरी हों अथवा आकाशवाणी करने के लिए आई हों...''
मैंने अपने लौकिक सम्बन्धियों को ललकार कर कहा-''अब हम वैकुण्ठ में जा रही हैं। हमारे लिए परमपिता परमात्मा ने विमान भेजा है। जब हम उस विमान में उड़ जायेंगी तो आप लोग हमको देखते ही रह जायेंगे! आप बहुत पछतायेंगे! फिर कुछ भी प्राप्त न कर सकेंगे!! इसलिए हम शक्तियाँ आकाशवाणी कर रही हैं कि कुछ वर्षों के बाद इस कलियुगी सृष्टि का महाविनाश होने वाला है। सभी की मौत सामने है। इसलिए अब आप भी वैकुण्ठ चलने की तैयारी करो।

-अगले अंक में क्रमशः

मेडिटेशन से परमात्म गोद और आनंद की अनुभूति हुई

[वंदना सिंह
छात्रा, इंटरमीडिएट
पटना (बिहार)

ब्रह्माकुमारीज द्वारा सिखाया जा रहा राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास पिछले 3 वर्षों से कर रही हूं। इसके पहले तनावयुक्त जीवन था जो अब तनावमुक्त हो चुकी हूं। राजयोग अभ्यास के साथ जो रोज मुरली महावाक्य सुनती हूं वह आत्मा का भोजन है। उसके बिना एक दिन भी नहीं रह सकती। क्योंकि इस महावाक्य का ज्ञान मेरे पग-पग पर काम आ रहा है। मेरे जीवन में किसी भी तरह का जो उतार-चढ़ाव आता है उसका सटीक जवाब इस मुरली महावाक्य में मुझे मिलता है। मेडिटेशन अभ्यास के बाद परमात्म गोद और बेहद आनंद की अनुभूति होती है। इस पतित दुनिया में रहकर भी यह सकारात्मक और सुंदर दिखने लगती है। मैं कहूंगी एक बार अवश्य राजयोग को जीवन में अपनाएं।

राजयोग ने बदला आत्महत्या का विचार, मिला नया जीवन

[अमोद कुमार
इंजीनियरिंग
हाजीपुर, वैशाली (बिहार)

मैं 10 साल से ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा सिखाए जा रहे राजयोग का अभ्यास कर रहा हूं। मेरा दुःखी जीवन जो लड़ाई-झगड़ा, कुंठित और कलुषित विचारों से परेशान बिल्कुल नीरस हो चुका था जो औरों को भी परेशान करने वाला था। जीवन तनाव और अवसाद से ग्रसित आत्महत्या करने को मजबूर हो चुका था। लेकिन जब से राजयोग ध्यान करना सीखा तब से जीवन की दिशा और दशा ही बदल कर खुशियों से भर चुका है। मैं उस परमपिता शिव परमात्मा का शुक्रगुजार हूं कि वे इस धरा पर अवतरित हो राजयोग की शिक्षा प्रदान कर मुझे धन्य कर दिया। अब मैं किसी से भी संस्कारों का तालमेल बिठा कर जीना सीख गया हूं। खासकर युवाओं से अपील करना चाहूंगा कि एक बार अपने जीवन में राजयोग को अपना कर इसका अनमोल फायदा जरूर देखें।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के प्रयास से हो रहा कैदियों में अनोखा परिवर्तन...

मन की ज्योत जगी, जीने की राह मिली

कैदियों के जीवन परिवर्तन के लिए विशेष रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा उमंग-उत्साह वाले क्लास आयोजित कर उनका मन, बुद्धि, संस्कार, स्वभाव, आचरण और चरित्र को पावन बनाने का कार्य हो रहा है।

नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनने का पढ़ रहे पाठ

1995 से जारी है राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण

35-40 कैदी प्रतिदिन लगाते है ध्यान

25-30 महिला कैदियों का बदला जीवन

जेल में में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंचासीन अतिथि व उपस्थित बंदी।

शिव आमंत्रण > कुरुक्षेत्र/ हरियाणा।
किसी भी तरह के अपराध का मूल कारण नकारात्मक विचारधारा है। इस विचारधारा को समाप्त करने की दिशा में ब्रह्माकुमारीज संस्थान अहम भूमिका अदा कर रही है। पिछले 25 वर्षों से कुरुक्षेत्र जेल में ईश्वरीय सेवाएं चल रही है। इन सेवाओं की शुरुआत राजयोगी भ्राता लक्ष्मण दास की अथक मेहनत, प्रयास और सरोज बहन के सहयोग द्वारा हुई। इन सेवाओं की शुरुआत में जेल अधीक्षक राजसिंह यादव का सराहनीय योगदान रहा। ईश्वरीय ज्ञान और योग का अभ्यास करने की बाद जेल में सभी कैदी भाइयों की विचारधारा बदल गई। आज से 25 वर्ष पहले जो ज्ञान का बीज बोया था। आज वह वट वृक्ष की तरह अनेक आत्माओं के लिए फलदायक बनी है। कितनी आत्माओं की आत्मा रूपी ज्योति जगी, जीने की नई राह मिली।

वर्तमान समय में 35 से 40 कैदी भाई व 25-30 महिला कैदी भी राजयोग का अभ्यास रोजाना करते है। राजयोग के अभ्यास से उनकी दिनचर्या में परिवर्तन आया। अपनी दिनचर्या की शुरुवात वह अमृतवेले से करते है जिससे उनका पूरा दिन परमात्म याद में बीतता है। इस ईश्वरीय ज्ञान से कर्मों की गहन गति का बोध हुआ। जिसके कारण कैदी भाई अपराध मुक्त और तनाव मुक्त हुए। ईश्वरीय ज्ञान से अनेक आत्माओं की ज्योति जगाई।

ब्रह्माकुमारीज कुरुक्षेत्र सेवाकेंद्र द्वारा रोज सुबह 8:30 से 9:30 बजे तक ईश्वरीय महावाक्य (मुरली) सुनाये जाते है। संस्थान की इस तरह कि सेवाओं के प्रयास से धर्म, जाति की सीमाएं टूट चुकी है। और वह अच्छे आचरण में बदलने लगी है। कैदी व्यसन मुक्त और तनाव मुक्त होने लगे है। बहुत सारे कैदियों ने रिहाई के बाद अपने-अपने स्थानीय सेवा केंद्र के निमित्त ईश्वरीय छात्र बनकर तन, मन, धन से अपनी हर तरह की सेवाएं प्रदान की है।

जेल वार्ड बना आध्यात्मिक : कुरुक्षेत्र कारागृह में कैदी भाई और बहनों को ईश्वरीय महावाक्य सुनाते है। ब्रह्माकुमारीज द्वारा कैदियों को कॉपियाँ, म्यूजिक के साथ आध्यात्मिक गीत सुनने के लिए म्यूजिक प्लेयर, सात दिवसीय कोर्स की चित्र प्रदर्शनी की भी सुविधाएं प्रदान की गई है। जिससे जेल का माहौल ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र जैसा शांतिपूर्ण हो चुका है। जहां गुरुवार को सभी को ईश्वरीय याद से बना भोग वितरित किया जाता है। 200 से 250 कैदियों को राखी बांध कर समाज में भाईचारे से रहने का संदेश दिया जाता है। जेल में हर रोज कॉमेंट्री द्वारा योग लगाने की विधि से कैदियों का मन शांत होने लगा है उनकी आसुरी वृति बदल कर दैवी वृति बन रही है। जबकि अब राजयोग के अभ्यास से कैदियों की अनिंद्रा की बीमारी दूर होने लगी है।

जेल सेवाओं में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका : कुरुक्षेत्र ब्रह्माकुमारीज सेवा केंद्र की बीके राधा, बीके नीरू, बीके मधु, बीके जरनैल, बीके अशोक, बीके रामेश्वर कारागृह में पुरुष कैदियों और कैदी महिलाओं को आध्यात्मिक ज्ञान, मेडिटेशन, सकारात्मक चिंतन, द्वारा बदलाव लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। जेल में बदलाव की सभी सेवाएं सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सरोज के मार्गदर्शन व नेतृत्व में की जाती है।

अनुभव कुरुक्षेत्र जेल के एक कैदी का विचार...

अब कभी परमात्मा का हाथ और साथ नहीं छोड़ सकता

शिव आमंत्रण > कुरुक्षेत्र। ईश्वरीय ज्ञान मिलने से पहले परमात्मा के बारे में सुना था कि परमात्मा भी है पर कभी अनुभव करने का अवसर नहीं मिला था। वैसे तो आध्यात्मिक कार्यों में रुचि थी। पूरे मन एवं लगन के साथ धार्मिक कार्यों में शामिल होता व परमात्मा को याद करने का नियम था। परंतु परमात्मा व आत्मा के विषय में कुछ भ्रम थे। परंतु जैसे ही ब्रह्माकुमारी बहनों से ईश्वरीय ज्ञान सुना तो सभी भ्रम दूर हो गए। जेल में आने के बाद तनाव में रहने लगा। लेकिन ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग के द्वारा तनाव मुक्त हो गया। अब इस ज्ञान के माध्यम से मुझे कर्मों की गति का पता चला कि हमें मन में किसी के प्रति नफरत व बदले की भावना के विचार नहीं लेने चाहिए। जैसा हम बीज बोएंगे वैसा ही फल पाएंगे। अब मैं परमात्मा का हाथ साथ कभी नहीं छोड़ सकता।

● अशोक अंतल, कैदी, कुरुक्षेत्र।

अनुभव / महिला कैदी के विचार...

राजयोग के प्रयोग से मेरा मुकदमा सुलझ गया

शिव आमंत्रण > कुरुक्षेत्र। 28 मई 2019 को कुरुक्षेत्र जेल केस में फंसकर आई थी। जीवन बहुत दुःखमय हो चुका था। लेकिन जब ब्रह्माकुमारीज का ईश्वरीय ज्ञान और योग सीखने को मिला तब मानो एक नया जन्म हुआ। मुझे ईश्वरीय परमात्म महावाक्य सुनते हुए 6 महीने हो गए है। जबसे मैं महावाक्य सुनने लगी हूं तब से बहुत सुख-शांति अनुभव हुई है। राजयोग का अभ्यास करने से तनाव और क्रोध मुक्त हो गई। मुझ पर किडनैपिंग का केस लगा हुआ है पर राजयोग का अभ्यास करने से मेरा केस सुलझ गया। एक दिन मैं परमात्मा शिव बाबा के चित्र के आगे बैठी तो बाबा ने मुझे अपने प्यार का अनुभव कराया। मेरे मन में हमेशा गीत बजता रहता है बाबा मेरा साथ तो डरने की क्या बात है।

● पूजा, महिला कैदी, कुरुक्षेत्र।

मेरा नजरिया

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, कुरुक्षेत्र की ओर से जिला कारागार कुरुक्षेत्र के पुरुष और महिला बंदियों के मानसिक तनाव को कम करने तथा उनको स्वस्थ्य रखने के उद्देश्य से जेल बंदियों को आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने हेतु नियमित रूप से ब्रह्माकुमारीज संस्थान की ओर से योग एवं ध्यान शिविर लगाये जा रहे है। इस संस्थान द्वारा कारागार में बंदियों के पुनरुत्थान एवं मानव कल्याण के हित में किए जा रहे सराहनीय कार्यों के लिए जेल प्रशासन सदैव इस संस्थान और यहां के इंचार्ज बीके सरोज का आभारी है। जेल प्रशासन भविष्य में भी आप सभी इसी प्रकार के सराहनीय सहयोग की उम्मीद करता है।

● संजय सिंह, जेल अधीक्षक, जिला कारागृह, कुरुक्षेत्र, हरियाणा।

मुझे पहली बार जेल में ईश्वरीय सेवाओं का अवसर मिला तब मेरे मन में यहां रहने वाले कैदियों के व्यवहार के बारे में भय था। लेकिन मैंने जब राजयोग का अभ्यास और ईश्वरीय ज्ञान सुनाना शुरू किया तो जो मेरे मन में था उसके विपरीत हुआ। सभी कैदी भाइयों ने मुझसे अपने मन की व्यथा और पीड़ा की। उन सब ने बताया कि कैसी-कैसी परिस्थितियों में हम सब ने क्राइम किया और हम जेल आ गए। क्योंकि उनकी सुनवाई न होने के कारण उनके मन में प्रशासन कर्मियों प्रति बहुत रोष रहता था। मैंने ईश्वरीय ज्ञान के माध्यम से कर्मों की गहन गति और राजयोग का अभ्यास कराया तो सभी कैदी भाइयों ने सकारात्मक सोचना शुरू किया और कईयों की रिहाई भी हो गई। जब मैं जेल में ज्ञान सुनाने जाती थी तो सभी भाई खड़े होकर ओम शांति कहते थे। क्योंकि उस समय क्लास बगीचे में होती थी।
सभी कैदी भाई अंदर सेवा-सत्कार से कुर्सी को फूलों से सजा देते थे। जेल की सेवाओं से मेरा अनुभव है कि जन्म से कोई बुरा नहीं होता और अपने श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा इस कलियुगी दुनिया को सतयुगी दुनिया में परिवर्तन कर सकते है। इसके साथ में जेल अधीक्षक श्री महावीर प्रसाद और हरीश रंगा ने शुरुआत में इन सेवाओं को बढ़ाने के लिए अपना योगदान दिया।

● बीके सरोज, सेवाकेंद्र प्रभारी, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

सन् 2012 में मेरे गांव के पड़ोस में झगड़ा हो गया, उस झगड़े में मुझसे पड़ोसी को गोली लग गई थी। फिर मेरे ऊपर धारा 307 का मुकदमा दर्ज हो गया था। इसी कारण परिवार के कुल 13 व्यक्तियों को जेल भेज दिया गया। जेल के वातावरण में मैं परेशान रहने लगा। समय बीतने के साथ मेरा तनाव भी बढ़ने लगा, मुझे नींद आने बंद हो गई, मैं कमजोर रहने लगा। एक दिन मैं अपने वार्ड के आगे खड़ा था तभी ब्रह्माकुमारी बहन ने मुझे भी ईश्वरीय ज्ञान सुनने के लिए कहा। और मैंने ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग का अभ्यास करना शुरू किया। उसके बाद मेरे जीवन में परिवर्तन आने लगा। मुझे शांति प्राप्त होने लगी। मैं तनाव मुक्त होने लगा। मैंने शिव बाबा से संकल्प किया कि आप ही मेरे रक्षक हो, करन करावनहार हो। आप ही मेरी जमानत करा सकते हो। कुछ समय के बाद मेरी जमानत हो गई। फिर मैं कुरुक्षेत्र सेवा केंद्र पर जाकर नियमित रूप से मुरली महावाक्य सुननी शुरू की। और अब गांव में भी गीता पाठशाला चलती है। मेरे स्व के परिवर्तन को देख कर जिन पड़ोसियों के साथ मेरा झगड़ा हुआ था वो भी अब गीता पाठशाला में ईश्वरीय ज्ञान सुनने लगे है। अब मैं सभी को परमात्मा का परिचय देता हूं।

● बीके मनजीत, कैदी, मुकिमपुर, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

|शिवरात्रि विशेषांक | 2020 | पृष्ठ 04 |

मूल्य ₹ 2.50

महा शिवरात्रि विशेष

बड़ा सच | 84 साल से चल रहा है विश्व परिवर्तन का महान कार्य

आत्मा-परमात्मा के अलौकिक मिलन का स्वर्णिम काल जारी

जैसे दिन के बाद रात्रि आना स्वाभाविक है वैसे सतयुग के बाद कलियुग आता है। यह दोनों ही प्रक्रिया अपने समयानुसार चलती रहती हैं। इसी समयावधि में परमात्मा का अवतरण होता है। सृष्टि पर परमात्मा को अवतरित हुए 84 वर्ष हो चुके हैं। उनसे मिलन मनाकर आज लाखों लोग भाग्य संवार रहे हैं। वर्तमान समय बदलते परिवेश, आतंकवाद सबकुछ बदलाव की ओर ही इशारा कर रही हैं। इस बीच शिव भगवान विश्व का निर्माण कर रहे हैं।

शिव आमंत्रण > आबू रोड। आत्मा, परमात्मा, सृष्टि चक्र और परमात्मा से मिलने की आशा और इच्छा दुनिया में लगभग हर एक को होगी। क्योंकि परमात्मा ही इस दुनिया में सबसे श्रेष्ठ और सर्वशक्तिवान हैं। हालांकि परमात्मा का मिलन शास्त्रों में कठिन तप के बाद माना जाता रहा है। कुछ शास्त्रों में एक निश्चित समय बताया गया है। परन्तु अधिकतर प्रमाण यह मिलता है कि जब इस सृष्टि पर आसुरी तांडव और मूल्यों की बलि चढ़ जाती है तो फिर आसुरी साम्राज्य को समाप्त कर नये समाज की स्थापना के लिए परमात्मा का अवतरण होता है। अर्थात आत्मा और परमात्मा के अलौकिक मिलन का अवसर प्रदान होता है।

वर्तमान परिदृश्य: आज यदि हम चारों ओर देखें तो कहीं से भी सभ्य समाज की परिकल्पना साकार होती नहीं दिख रही है। बल्कि मनुष्य, मनुष्य के रूप में एक हैवान और शैतान हो गया है। ऐसे दुष्कृत्य हो रहे है कि मानव की श्रेणी तो दूर राक्षसों की श्रेणी से भी बाहर हो गया है। तमाम तरह की समाज को कलंकित कर देने वाली ऐसी घटनायें हो रही है जिससे मनुष्य की दुनिया में भी भयंकर डर लगने लगा है। नारी का चीरहरण आम हो गया है, बालिकाओं के साथ शैतानियत ने मानवीय रिश्तों को तार-तार कर दिया है। मजहबी हिंसा, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, ऊंच नीच का भेदभाव, सम्बन्धों की टूटती मर्यादा की डोर इस बात की ओर संकेत करती है कि ये सब लक्षण मायावी दुनिया के ही लोगों के हैं, जिसमें हम सब है।

मंडरा रहे विनाश के बादल

हमेशा से इस बात का जिक्र होता रहा है कि जब-जब अधर्म इस दुनिया पर होता तब विनाश होता और नयी दुनिया आएगी। आज विनाश के तमाम चिन्ह हमारे सामने पहाड़ की तरह से खड़े होकर पुकार रहे हैं। हथियारों की बारूद पर बैठी दुनिया, एक देश का दूसरे देश के बीच तकरार, भौतिकता दृष्टिकोण से प्राकृतिक बदलाव मानव जीवन को खतरे की ओर ले जा रही है। यह सब कुछ हम देख और जान रहे हैं, फिर भी आंखे मूंदे पड़े हैं। जो दृश्य दिख रहे हैं वे केवल इस संसार के सत्यों में ही हैं। अर्थात आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, भौतिकता सभी सत्ताएं चीख-चीख कर समय के बदलाव के लिए पुकार रही हैं।

शास्त्रों में शिव महिमा... | शिवपुराण के कोटी रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है-

भगवानुवाच: 'मैं ब्रह्मा के तन से देता हूं ईश्वरीय ज्ञान'

गीता, शिवपुराण, महाभारत और यजुर्वेद सभी धर्मग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात स्पष्ट लिखी हुई है। शिवपुराण के कोटी रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है 'मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रगट होऊंगा' अर्थात् 'समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रगट हुए और उनका नाम रुद्र हुआ। परमात्मा शिव ने ही ब्रह्मा मुख द्वारा नई सृष्टि रची। जब ब्रह्मा द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ, तब शिव ने ब्रह्मा की काया में प्रवेश किया। ब्रह्मा को पुनर्जीवित कर उनके मुख द्वारा नई सृष्टि रचने का कार्य आरंभ किया'। शिव पुराण में यह उल्लेख अनेक बार आया है। साथ ही स्पष्ट लिखा है कि 'सर्व कामनाओं को पूर्ण करने वाले परमात्मा का चिह्न शिवलिंग ही है। सृष्टि के विनाशकाल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंगम प्रगट हुआ जो न घटता था, न बढ़ता था। वह अनुपम, अव्यक्त था। उस द्वारा ही सृष्टि का आरंभ हुआ' अर्थात् परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस दुःख से भरे तमोगुणी वातावरण को परिवर्तन किया।

महाभारत के शान्तिपर्व श्लोक संख्या 337-24-25 में लिखा है कि **'भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया'**। साथ ही लिखा है सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई। वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग के स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया और इस सृष्टि का कल्याण किया। **अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्, परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।** परमात्मा ने गीता के नौवें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि 'मनुष्य तन का आधार लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूं तो भी तामस भाव वाले लोग मुझे पहचान नहीं सकते'।

अधर्मी, आसुरी, कलियुगी दुनिया के महापरिवर्तन का कार्य त्रिमूर्ति, त्रिकालदर्शी स्वयं परमपिता परमात्मा शिव के निर्देशन में चल रहा है

देवों के भी देव महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी, विश्व की सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव ही हैं। वे अजन्मा, अकर्ता, अभोक्ता, अविनाशी हैं। परमधाम के निवासी हैं, जिसे हम शांतिधाम, निर्वाणधाम, बैकुण्ठ, ब्रह्मलोक कहते हैं। परमात्मा शिव हजारों सूर्यों से भी तेजोमय हैं। उन्हें इन स्थूल आंखों से देखना संभव नहीं है। उनके साथ की अनुभूति तो की जा सकती है। वे तो पवित्रता के सागर हैं हम पवित्र बने बगैर उनसे अपना संबंध नहीं जोड़ सकते हैं। जब आत्मा पवित्रता का व्रत लेकर उस सर्वशक्तिवान से ध्यान लगाती है तो उनके साथ की, उनकी शक्तियों की अनुभूति होने लगती है। पिछले 81 वर्षों से आत्मा-परमात्मा के महामिलन का मंगल मेला राजस्थान के माउंट आबू में हो रहा है। इसके साक्षी लाखों ब्रह्मकुमार भाई-बहनें हैं।

दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका
ब्रह्माकुमारीज

परमात्मा के हाथों में जिंदगी

मेरी जिंदगी परमात्मा के हाथों में है। जैसे चलाता है वैसे ही मैं चलती हूं। ईश्वर ने जो पढ़ाया है और जो पढ़ा रहा है उसे एक बच्चे की तरह पढ़ती हूं। सदा एक ही बात याद रखती हूं कि मैं कौन (एक आत्मा) और मेरा कौन (एक परमात्मा)। परमात्मा की याद दिनरात दिल में समाई रहती है। सुख-शांति और प्रेम मेरे तीन बच्चे हैं और दिलवाले (परमात्मा) मेरे पति हैं। ये पूरा विश्व मेरा परिवार है। जन्मोजन्म का भाग्य बनाने का ये उचित समय है।

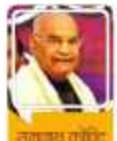

रामनाथ कोविंद
राष्ट्रपति
भारत

सभी एक ईश्वर की संतान

जब हमें शांति नहीं मिलती है तो भटकते हैं और लगता है कि उपासना पद्धति में शांति मिलेगी। लेकिन मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारे में भी हमें शांति, नहीं मिलती है, लेकिन ब्रह्माकुमारीज ने अध्यात्म का जो मार्ग खोजा है, अध्यात्म में ही सच्ची शांति मिल सकती है। हम सब एक ईश्वर की संतान हैं। करीब 80 वर्ष पूर्व इस ईश्वरीय संस्था को आरंभ करने वाले ब्रह्मा बाबा ने आजीवन नारी को सच्चे मायनों में तराशने का काम किया है।

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री
भारत सरकार

स्वर्णिम दुनिया की स्थापना

ब्रह्माकुमारीज का स्वच्छता अभियान से जुड़ने के लिए आभार व्यक्त करता हूं। संस्थान ने भारत की प्रतिष्ठा को दुनियाभर में पुनः स्वर्णिम दुनिया प्रतिस्थापित करने के लिए काम रही है। यहां की विचारधारा सर्वधर्म समभाव लाती है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का जो इनका मार्ग है वह स्वच्छता के स्थायी संस्कार विकसित करने में महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। पर्यावरण संरक्षण, बेटी बचाओ, महिला सशक्तिकरण को लेकर सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

परमात्मा हो चुके अवतरित

ब्रह्माकुमारी में आत्मा का सशक्तिकरण और अच्छे इंसान बनाने का काम बहुत ही तेजी से हो रहा है। मेडिटेशन आत्मा की जागृति के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। ब्रह्माकुमारी की ओर से नारी शक्ति के सम्मान में जो कार्य किया रहा है वह इतिहास में लिखा जाएगा।

● रविशंकर प्रसाद, केंद्रीय कानून मंत्री, भारत सरकार

सभी आकर वर्सा लें

हमें यह लगता ही नहीं कि हम परमात्मा के साथ रह रहे हैं, क्योंकि परमात्मा ने हमारी पालना बिल्कुल मां-बाप जैसी की है। परमात्मा के साथ जीवन सफल हो गया। सभी को आकर परमात्मा से अपना वर्सा लेना चाहिए।

● राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

जीवन सफल हो गया

शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के तन में आकर नई दुनिया की स्थापना का कार्य शुरू किया वह किसी अजूबे से कम नहीं था। मुझे खुशी है सारा जीवन परमात्मा द्वारा रचे हुए यज्ञ में सफल हो गया।

● राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

परमात्मा के अंग-संग रहा

परमात्मा के बारे में हमने सिर्फ सुना था कि वह इस रूप में आते हैं, ऐसे मिलते हैं। मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे परमात्मा मिलन का ही नहीं, बल्कि हर पल उनके अंग-संग रहने का अवसर मिल रहा है।

● ब्रह्माकुमार निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज, माउंट आबू

नई दुनिया का कार्य जारी

मैंने अपने जीवन में ईश्वरीय शक्ति को महसूस किया है। परमात्मा आ चुके हैं, यह सत्य है। यह कार्य कोई मनुष्य कर ही नहीं सकता। परमात्मा शिव अब प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से नई दुनिया की स्थापना का कार्य करा रहे हैं।

● ब्रह्माकुमार बृजमोहन, प्रधान संपादक, प्यूरिटी मैगजीन, दिल्ली

...प्रतिदिन मिलती हूं

परमात्मा इस धरा पर आ चुके हैं। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझती हूं कि परमात्मा ने स्वयं अपने कार्य में मुझे सहयोगी बनाया। परमात्मा से मैं प्रतिदिन मिलन मनाती हूं। आप भी अपने परमपिता से एक बार जरूर मिलें।

● ब्रह्माकुमारी आशा, निदेशिका, ओआरसी, गुरुग्राम, हरियाणा

अल्लाह को कहा- नूर

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वह लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम व ज्योतिस्वरूप

एक ओंकार निराकार

सिख धर्म में गुरुनानक देवजी ने कहा है 'एक ओंकार निराकार'। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। 'वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम है' जिसको काल कभी नहीं खा सकता। यह सब महिमा गुरुवाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सतनाम कहा। साथ ही उन्होंने हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

श्रीराम ने की पूजा

परमात्मा शिव की पूजा स्वयं श्रीराम ने भी की है, जो वर्तमान समाज में रामेश्वरम के रूप में पूजा जाता है। शिव श्रीराम के भी आराध्य हैं। यदि श्रीराम भगवान होते तो उन्हें ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा की तपस्या करके ही प्राप्त की थी। शिव की शक्ति के सामने मुकाबला करने के लिए शिव की शक्ति से ही विजयी हो सकते हैं।

ज्योति स्वरूप की मान्यता सभी धर्मों में, ईश्वरीय शक्ति से बदलेगा जीवन

सभी धर्मों ने स्वीकारी ज्योति की सत्ता

परमात्मा उसे कहते हैं जिसे विश्वभर की मनुष्य आत्माओं ने किसी न किसी रूप में स्वीकार किया हो, जो सर्वमान्य हो, सर्वज्ञ हो, जिसका कोई माता-पिता न हो, सर्वशक्तिमान हो, निर्वैर हो। ऐसे ही देवों के भी देव महादेव परमपिता परमात्मा शिव हैं इनके अस्तित्व को सभी धर्मों ने अलग-अलग रूप से स्वीकारा है।

चाहे भारत हो या फिर दुनिया का कोई भी देश। परमात्मा की व्याख्या परम ज्योति, सूर्य के समान तेजोमय प्रकाश के रूप में ही की है।

सर्व आत्माओं के परमपिता

परमात्मा सर्व आत्माओं के परमपिता हैं, जिन्हें कोई ईश्वर, कोई अल्लाह तो कोई गॉड कहता है। जहां हिन्दू धर्म में निराकार परमात्मा को ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजा जाता है वहीं अन्य धर्मों में भी परमात्मा को निराकार ज्योति स्वरूप माना जाता है।

रोम में प्रियपस कहा...

पारसियों के अग्यारी में होली फायर मिलता है। पारसी जब भारत आए तो जलती हुई अग्नि का अंश लेकर आए। वह आज भी जब नई अग्यारी की स्थापना करते हैं तो जलती हुई ज्योत का अंश स्थापन करते हैं, जो परमज्योति का प्रतीक है। मिस्र में शिव की पूजा सेवा नाम से तथा फिजी देश में शिव को सेवा या सेवाजिया नाम से पूजते हैं। रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहा जाता है। इटली में गिरजा घर में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है।

शिवलिंग पर तीन रेखाएं ही क्यों...?

शिवलिंग पर तीन रेखाएं परमात्मा द्वारा रचे गए तीन देवताओं का ही प्रतीक है। शिवलिंग पर तीन रेखाएं और एक आंख दिखाई जाती है। साथ ही तीन पत्तों का बेलपत्र चढ़ाया जाता है। इसका अर्थ है शिव तीनों लोकों के स्वामी हैं। तीन पत्तों का बेलपत्र परमात्मा के ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता होने का प्रतीक है। वे प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का विनाश करते हैं।

शिव के साथ क्या है रात्रि का संबंध

ये बड़ा सवाल है कि विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव जन्मदिन के रूप में मनाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव की जयंती को जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि कहा जाता है, आखिर क्यों? इसका अर्थ है परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं। उनका किसी महापुरुष या देवता की तरह शारीरिक जन्म नहीं होता है। वह अलौकिक जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती कर्तव्य वाचक रूप से मनाई जाती है। उनका अवतरण विकार- विकारों की कालिमा से लिप्त अज्ञान निद्रा में सोए मनुष्य को जगाने के लिए होता है। जब-जब इस सृष्टि पर पाप की अति, धर्म की ग्लानि और पूरी दुनिया दुःखों से घिर जाती है तो गीता में किए अपने वादे अनुसार परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं और पुनः सहज राजयोग की शिक्षा देकर सतधर्म की स्थापना का दिव्य करते हैं।

सत्य | शिव की रचना है शंकर, ब्रह्मलोक के हैं वासी

शंकर के भी परमात्मा हैं 'शिव'

शिव और शंकर में महान अंतर है। शिवलिंग परमात्मा शिव की प्रतिमा है। परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है चिह्न। अर्थात् कल्याणकारी परमात्मा को साकार में पूजने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। शिवलिंग को काला इसलिए दिखाया गया क्योंकि अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा अवतरित होकर अज्ञान-अंधकार मिटाते हैं। परमपिता परमात्मा शिव देवताओं एवं समस्त मनुष्यात्माओं के पिता हैं। उनका दिव्य अवतरण होता है। वे अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता और ब्रह्मलोक के निवासी हैं। शिव और शंकर में उतना ही अंतर है जितना कि पिता और पुत्र में। शंकर का आकारी शरीर है। शंकर परमात्मा शिव की रचना है। परमात्मा शिव ने शंकर को इस कलियुगी सृष्टि के विनाश के लिए रचना की है। यही वजह है कि शंकर हमेशा शिवलिंग के सामने तपस्या करते हुए दिखाए जाते हैं। वह हमेशा ध्यान की मुद्रा में रहते हैं। यदि शंकर स्वयं भगवान होते तो उन्हें ध्यान करने की क्या जरूरत है? ध्यानमग्न शंकर की भाव-भंगिमाएं एक तपस्वी के अलंकारी रूप हैं। शंकर और शिव को एक समझ लेने के कारण हम परमात्म प्राप्तियों से वंचित रहे। अब पुनः अपना भाग्य बनाने का मौका है।

परमात्मा ज्योति स्वरूप हैं: स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद ने भी अपने शिव स्तोत्र में शिव की वंदना इन शब्दों में की है -सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालन करने वाले हैं, जो असीम महिमा वाले हैं। उन पारलौकिक परमात्मा को मेरे जीवन की श्रद्धा-ज्योति समर्पित है। परमात्मा शिव निराश और आकार से सदा परे ज्योतिस्वरूप हैं। उन्हें अखंड प्रभु-स्तुति द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है। वे ही कलियुगी, विकारी सृष्टि के विकार मिटाने वाले प्रभु हैं। उन्हें मेरा प्रणाम है।

गॉड इज लाइट

जीसस ने परमात्मा को लाइट कहा। उन्होंने कहा 'गॉड इज लाइट', आई एम द सन ऑफ गॉड। आज भी चर्च में एक बड़ी मोमबत्ती जलाते हैं जो परम ज्योति परमात्मा का ही सूचक है। ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया है कि जब हजरत मूसा सिनाई पर्वत पर गए तो उन्हें परमज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसे देख हजरत मूसा ने कहा - जेहोवा। वहीं जापान में तीन फीट की ऊंचाई पर स्टैंड पर एक लाल पत्थर को

शंकर भी लगाते हैं ध्यान

हम शंकरजी को हमेशा ध्यान की मुद्रा में देखते हैं। इससे स्पष्ट है उनके भी कोई आराध्य या देव हैं, जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमात्मा शिव, शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश करते हैं। शंकर जी की ध्यानमुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें वह निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं।

श्रीकृष्ण ने भी पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने भी ज्ञानेश्वर, सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता, सर्व शक्तिमान, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के बल से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पांडवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद वह युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है, क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

राजयोग के अभ्यास से आत्मा में बढ़ेगी शक्ति, नर से नारायण बनेगा इंसान

विश्व परिवर्तन का कार्य जारी, नई दुनिया की तैयारी

जब कुछ भी इस सृष्टि पर घटित होता है तो कोई न कोई उसका साक्षी होता है, जो उसे लोगों तक पहुंचा सके। तभी वह घटना सत्य मानी जाती है। परमात्मा ने कहा है कि जब सृष्टि पर धर्म का नाश होगा, तब एक धर्म की स्थापना करने आऊंगा। परमात्मा ने गीता में स्पष्ट कहा है जब-जब इस सृष्टि पर धर्म की अति ग्लानि होगी, तब मैं इस सृष्टि पर आऊंगा। धर्म की अति ग्लानि आपके सामने है। ऐसे समय में परमात्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना का कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में धरा पर परमात्मा का अवतरण हो रहा है। इसे लाखों लोगों ने देखा और अनुभव किया है।

परमपिता परमात्मा का अपना शरीर नहीं होता

कहा जाता है बिन पग चले सुने बिन काना, कर्म करहु, केहि विधि नाना। सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिंध (जो अभी पाकिस्तान में है) में इस मिलन का छोटेस्तर से प्रारम्भ हुआ। संस्था की शुरुआत में मात्र 350 भाई-बहनें ही थे। तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की जरूरत थी, जिससे लोगों को यह एहसास हो सके कि यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की दिव्य शक्ति सेना है। परमात्मा को भारत और वंदेमातरम् की गाथा को चरितार्थ करना था। इसलिए माताओं-बहनों के सिर पर ही ज्ञान का कलश रखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया।

महापरिवर्तन जारी, नई दुनिया की तैयारी

दुनिया तेजी से बदल रही है, प्रकृति, पुरुष और सत्ता सभी में बदलाव हो रहा है। यह कलियुग के अंतिम चरण और सतयुग के प्रारम्भ का समय है। परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन हो रहा है। तीन सत्ताएं काम कर रही हैं- परम सत्ता (सर्वोच्च सत्ता), मनुष्य आत्माएं और प्रकृति। वर्तमान समय मनुष्यात्माओं के कर्म इतने निम्न स्तर के हो गए हैं कि इनका उल्लेख शास्त्रों में भी नहीं है। इसका सीधा असर चारों ओर बाढ़, सुनामी, भूकंप के रूप में प्रकृति का रौद्र रूप सर्वविदित है। इतिहास साक्षी है जब सृष्टि चक्र में ऐसी स्थिति मनुष्य और समाज की हो जाती है तो विश्व का परिवर्तन अवश्यम्भावी है। यह परिवर्तन परमात्मा के सान्निध्य में होता है। इसमें मनुष्यात्मा और प्रकृति दोनों ही पवित्र और सतोप्रधान बनते हैं। फिर नयी दुनिया का आगमन होता है। आज उसी घड़ी से हम गुजर रहे हैं। एक तरफ आसुरी प्रवृत्तियों का बढ़ता तांडव, दूसरी ओर परमात्म शक्ति द्वारा पूरे विश्व का परिवर्तन दोनों जारी है। यह समय नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी समान बनाने का समय है।

चारों युगों में एक बार होता है सर्वोच्च सत्ता का अवतरण

चारों युगों में एक बार ही इस सृष्टि पर परमात्मा का अवतरण होता है। जब यह दुनिया पतित भ्रष्टाचारी बन जाती है। आसुरीयता का बोलबाला हो जाता है। ऐसे समय में परमात्मा को इस सृष्टि पर आकर पुनः नई दुनिया की स्थापना का महान कार्य करना पड़ता है। जब दुनिया भौतिकता की चकाचौंध में इतनी डूब जाती है कि उसके ज्ञान नेत्र बंद हो जाने के कारण सत्य और असत्य का कुछ पता ही नहीं चलता है। तब परमात्मा आकर अपने बच्चों को स्वयं की एवं परमात्मा की पहचान बताते हैं। उनके असली गुणों और कर्तव्यों की याद दिलाते हैं। इस तरह आत्मा और परमात्मा का यहां मिलन होता है, जो वर्तमान में जारी है।

परमात्मा का अवतरण अलौकिक और दिव्य

परमात्मा का अवतरण अलौकिक और दिव्य होता है। इसे देखने एवं पहचानने के लिए उसी रूप में आना पड़ता है। वह इसकी विधि भी खुद ही बताते हैं ताकि कोई भी रुकावट और अड़चन पैदा न हो सके। परमात्मा नाना प्रकार के कर्म करते हैं। जहां एक ओर भक्तों को भगवान से मिलने की आस पूरी करते हैं। वहीं आसुरी प्रवृत्तियों का भी नाश करते हैं। वह अपने विविध रूपों द्वारा प्रत्येक बच्चों के पास संदेश भेजते हैं और उन्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर परमात्मा से मिलन मनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। परंतु बहुत से लोगों को यह यकीन नहीं होता। फिर परमात्मा को अपना परिचय स्वयं देना पड़ता है। यहीं से शुरू होता है परमात्मा और आत्मा के मिलन का अद्भुत खेल। ऐसे हालात में यह जानना जरूरी होता है आखिर परमात्मा कौन है, कैसा स्वरूप है, कहां मिलेंगे, कैसे उनसे संवाद होगा, कहां रहते हैं। हम आत्माओं का असली घर कहां है। यह सारी बातों का ज्ञान होना जरूरी है।

बच्चे कहकर बुलाया...

जब मैं पहली बार माउंट आबू पहुंचा तो बाबा ने मुझे बच्चा कहकर बुलाया। मैंने उसी समय अपना जीवन समर्पित करने का निश्चय कर लिया। आज भी प्रतिदिन ईश्वरीय शक्ति से मिलन होता है।

● ब्रह्माकुमार करुणा, प्रभाग निदेशक, पीस ऑफ माइंड चैनल, आबू रोड

परमात्मा से संवाद का जरिया है राजयोग

जी हां, यह सच है। आप भी परमपिता शिव परमात्मा से मंगल मिलन मना सकते हैं। इसके लिए न तो गाड़ी चाहिए और न घोड़ा है। बस जरूरत है तो नए परिवर्तन की ओर पहल करने की। राजयोग मेडिटेशन वह माध्यम जिसके जरिए हम स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा से मन के तार द्वारा मिलन मना सकते हैं। यह विधि बहुत ही सरल और आसान है। इसके अलावा आपको इसे सीखने के लिए न रुपए खर्च करने की जरूरत है और न ही घर बार छोड़ने की। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेवाकेंद्र पर जाकर आप परमात्मा से मंगल मिलन मनाने की इस विधि को बिना कोई शुल्क दिए सीख सकते हैं। यह सत्य है कि आप और हम देह नहीं एक आत्मा हैं। शरीर तो एक वस्त्र की तरह है जो हमें परमात्मा ने कर्म करने के लिए दिया है। जब आत्मा शरीर से निकल जाती है तो पांच तत्वों से बना यह शरीर इसी पृथ्वी लोक पर पांच तत्वों (जल, अग्नि, आकाश, जमीन और वायु) में समा जाता है। आत्मा और परमात्मा का स्वरूप एक जैसा ज्योतिबिन्दु है। परमात्मा ही आत्मा के वास्तविक पिता हैं।

एक दृष्टि ने जीवन बदला

संस्था के संपर्क में आने से ही समस्याओं का अपने आप समाधान होने लगा। परमात्मा की शिक्षा एवं उनके महावाक्य बिल्कुल सहज और असाधारण हैं। उनकी एक दृष्टि जीवन बदल देती है।

● ब्रह्माकुमार मृत्युंजय, कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज, माउंट आबू

ईश्वर हमारे पिता भी हैं

हां, मैं ईश्वर से साक्षात मिला हूं। वह ईश्वर के साथ हमारे पिता भी हैं। अपने परमपिता से मिलना एक सुखद अनुभूति है। यह शब्दों में बयां नहीं की जा सकती। परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर नयी दुनिया बना रहे हैं, यह सच है।

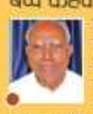

● स्वाति राकेश, एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट

परमधाम निवासी हैं

मैंने स्वयं परमात्मा की शक्तियों को अनुभव किया है। यह सच है कि परमात्मा अवतरित हो चुके हैं। वह इस संस्था के माध्यम से नई दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। भगवान सर्वव्यापी नहीं है, बल्कि परमधाम के निवासी हैं।

● वेद व्यास, पूर्व वैज्ञानिक, भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर

परमात्मा आ चुके हैं

अपने वादे के अनुसार परमात्मा धरती पर अवतरित हो चुके हैं। वह स्वयं मात-पिता हमारी पालना कर रहा है। राजयोग से उनकी शक्ति को फील कर सकते हैं।

● डॉ. ममता जैन, एडी, अपोलो हॉस्पिटल दिल्ली

नई दुनिया बना रहे बाबा

शिवबाबा नई दुनिया बना रहे इसमें कोई शक नहीं है। शिवबाबा जो ज्ञान दे रहे हैं, उससे लोगों के जीवन में जो बदलाव आ रहा है वह आश्चर्यजनक है। आज पूरे विश्व में हर प्रकार के और अनेक सोच वाले लोग इस अभियान का हिस्सा हैं। राजयोग के नियमित अभ्यास से आपका जीवन भी खुशियों से भर जाएगा।

● ब्रह्माकुमारी शिवानी

यह ज्ञान बहुत जरूरी है

यहां दिए जा रहे आत्मा के ज्ञान को जीवन में धारण कर हम अपना जीवन दिव्य बना सकते हैं। यहां आत्मा के ज्ञान की स्पष्ट व्याख्या की जाती है। समाज के लिए यह ज्ञान बहुत ही जरूरी है।

● जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, अध्यक्ष, विश्व कल्याण परिषद, दिल्ली

राजयोग से होता विकास

यहां दिया जा रहा ज्ञान हर कसौटी पर खरा है। इसमें अविश्वास की कोई बात नहीं। राजयोग मेडिटेशन से मन का विकास होने लगता है। जिस निःस्वार्थ भाव से संस्था कार्य कर रही है वह एक दिन जरूर मिशन में सफल होगी।

● दया चौधरी, न्यायमूर्ति, हाईकोर्ट, पंजाब-हरियाणा

जानने का प्रयास करें

यहां के पवित्र वातावरण में आत्मा और परमात्मा को जोड़ने वाली विद्या को ही राजयोग कहते हैं। यही सनातन सत्य है, शाश्वत है। सभी धर्मावलंबियों को इसे जानने का प्रयास करना चाहिए।

● स्वामी विवेकमुनि, राष्ट्रपति, विश्व अहिंसा संघ, दिल्ली

बहुत बड़ा भाग्य है...

यहां ईश्वरीय शक्ति के सान्निध्य में काम हो रहा है। मुझे तीन बार आने का अवसर मिला है। यह हमारे लिए अति सुखद है। बाबा से भी मिलने का अवसर प्राप्त हुआ है। यह बहुत बड़ा भाग्य है।

● करुणाकरन भंते, राष्ट्रीय अध्यक्ष, बौद्ध मठ नालंदा बिहार, ऑल इंडिया कमेटी

सांसों में परमात्मा बसा

स्वयं परमात्मा ने 16 वर्ष की आयु में अपने विश्व परिवर्तन के कार्य में लगा लिया। मेरा अनुभव है यदि आप परमात्मा को अपना बना लो तो आपकी पालना वही करेगा। हर सांस में परमात्मा की सेवा और याद दौड़ती है।

● राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मुन्नी, कार्यक्रम प्रबंधक, शांतिवन आबू रोड

माउंट आबू में हर साल दुनियाभर से पहुंचते हैं लाखों लोग...

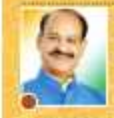

प्रभु मिलन का महासंगम

दुनियाभर के 142 देशों से भाई-बहनें परमात्मा से मंगल मिलन मनाने हर साल माउंट आबू पहुंचते हैं।

पिछले 84 वर्ष से जारी है मिलन...

पूरी दुनिया में केवल एक ही ऐसी जगह है जहां आत्मा-परमात्मा के मिलन का साक्षात महाकुम्भ होता है। यह सच है, यह मिलन पिछले 84 वर्षों से लगातार जारी है। ज्ञान की गंगा में ज्ञान स्नान कर ये सभी लोग देवत्व की राह पर चल पड़े हैं। इस महामिलन के साथी किसी भी भाई-बहन से पूछें तो सभी का एक ही उत्तर मिलता है, नर से नारायण व नारी से लक्ष्मी बनना है। इतना ऊंचा मुकाम है, फिर भी इसकी सफलता उनके नयनों में साफ झलक जाएगी।

दादा लेखराज को बनाया सारथी...

सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिंध (अभी पाकिस्तान में) में इस मिलन का एक छोटे स्तर से प्रारम्भ हुआ। क्योंकि तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की जरूरत थी जिससे लोगों को यह एहसास हो सके यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की दिव्य शक्ति सेना है। उन्होंने माताओं-बहनों के सिर पर ज्ञान का कलश रखा और इस महामिशन में अग्रणी बनाया।

14 वर्ष तक कराई कठिन तपस्या...

परमात्मा तो जानी जाननहार है, इसलिए उन्होंने ब्रह्मा वत्सों की भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्षों तक घोर तपस्या कराई। संस्था के प्रारम्भ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं- बहनें और कुछ भाई 14 वर्षों तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप-त्याग की शक्ति दूसरों को भी अध्यात्म व परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है।

142 देशों में फैला ईश्वरीय संदेश

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार यह संस्था राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउंट आबू आई। माउंट आबू से ही विश्व परिवर्तन के कार्य का शंखनाद हुआ। वर्ष 81 पूर्व प्रारम्भ हुई यह संस्था आज पूरे विश्व में एक वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। संस्था के विस्तार में 142 मुल्कों में करीब नौ हजार से भी ज्यादा सेवाकेन्द्रों से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना तथा उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा जारी है।

परमात्मा ने स्वयं दिया अपना परिचय

दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे कि उन्हें रात्रि के समय अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आयी। फिर जब वे अपने घर पहुंचे और एक दिन अपने कमरे में बैठे थे तब उनके अन्दर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया तथा स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं आनंद स्वरूप, प्रकाश स्वरूप, ज्योति स्वरूप हूं। तुम्हें नई दुनिया की स्थापना करना है। इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यहीं से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के दुनिया बदलाव का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

एक परमात्मा का मिल रहा संदेश

भारत विश्व गुरु था और फिर से बनने जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की इसमें अहम भूमिका है। यहां से परमात्मा एक है का संदेश दिया जा रहा है। युवा समाज विकास के केन्द्र बिन्दु हैं। इनका सशक्तिकरण ही नया समाज का आधार बनेगा।

•ओम बिरला, स्पीकर, लोकसभा दिल्ली

स्वयं को खोजना ही परमात्मा को पाना है।

राजयोग मेडिटेशन और अध्यात्म का संदेश विश्व के 140 देशों में फैल रहा है। मानव सेवा ही माधव सेवा है। हमारा संस्कार रहा है। स्वयं को खोजना ही अध्यात्म है। दुनिया को शांति की जरूरत है।

•वैंकेया नायडू, उपराष्ट्रपति, भारत

दुनिया को सबसे ज्यादा शांति की जरूरत

ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान सबसे ऊंचा है। ये सीधे परमात्मा से मिलन कराता है। राजयोग मेडिटेशन परमात्मा से जोड़ता है। यदि खुद के अन्दर शक्ति शक्ति का विकास चाहिए तो राजयोग ध्यान को अपनाना पड़ेगा।

•प्रतापचंद्र सारंगी, पशुपालन विभाग, लघु तथा मध्यम उद्योग मंत्री, भारत सरकार, दिल्ली

मन की आसुरी वृत्तियों को समाप्त करने की जरूरत

ब्रह्माकुमारीज संस्थान पूरे विश्व में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रहा है। यहां दिए जाने वाले ज्ञान से मन की आसुरी वृत्तियां समाप्त होती हैं। इससे ही परमात्मा के समीप जा सकेंगे।

•फग्गन सिंह कुलस्ते, केन्द्रीय इस्पात राज्यमंत्री, भारत सरकार, दिल्ली

जीवन में शीतलता के लिए राजयोग जरूरी

ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान, विज्ञान और अध्यात्म का संगम है। इससे ही मानव का विकास होगा। अन्तर्मन में ज्ञान की ज्योति ही परमात्मा से मिला सकती है। इसे जीवन में अपनाएं।

•अर्जुनराम मेघवाल, केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री, भारत सरकार, दिल्ली

आध्यात्मिक शक्ति हमें सही दिशा दिखाती है

राजयोग से जीवन में असीम शांति मिलती है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन ब्रह्माकुमारीज संस्थान का स्लोगन है। आध्यात्मिक शक्ति ही हमें सही दिशा दिखा सकती है।

•जी. कृष्ण रेड्डी, केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार, दिल्ली

प्रेम से रहना सिखाया

अपने स्थापना के 84 वर्ष पूरे कर चुकी ब्रह्माकुमारीज संस्था का स्वर्णिम इतिहास सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणादायी है। संस्था ने आज के तनावयुक्त वातावरण में शांति व प्रेम से रहना सिखाया है। यह ज्ञान समाज के लिए बहुत जरूरी है।

•सुभाष घई
फिल्म निर्माता, मुंबई

मेरा जीवन बदल गया

ब्रह्माकुमारीज संस्था से जुड़कर मेरा पूरा जीवन ही बदल गया। यह सत्य है परमपिता परमात्मा शिव का इस धरा पर अवतरण हो चुका है। वे सहज राजयोग की शिक्षा देकर हम आत्माओं को पावन बना रहे हैं।

•सुरेश ओबेरॉय
प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता, मुंबई

यहां, सभी अभिनयकर्ता

साकार में परमात्मा से मिलकर लगता है कि जो पाना है वो मैंने पा लिया है। मेडिटेशन से आत्मिक शांति मिलती है। परमात्मा ने जो ज्ञान दिया उससे पता चला कि हम सभी इस सृष्टि रंगमंच पर अभिनयकर्ता हैं और हमें अपना अभिनय खुशी से करना है।

•ग्रेसी सिंह
फिल्म अभिनेत्री, मुंबई

ईश्वर का सत्य दे रहे

यहां ईश्वर और उसकी रचना का सत्य ज्ञान दिया जा रहा है। यहां सिखाए जा रहे राजयोग के महत्व को मैंने खुद जीवन में अनुभव किया है। परमात्मा से मिलन मनाकर मैं स्वयं को धन्य समझता हूं।

•धनंजय लांबे
वरिष्ठ पत्रकार, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता

पत्र व्यवहार का पता

संपादक: ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज मीडिया एवं कॉलेज रिलेशन ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो: 9414172596, 9413384884, 9179018078
Email: shivamantran@bkivv.org
bkkomal@gmail.com

• प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित • सलाहकार संपादक: प्रो. कमल दीक्षित • संपादक: ब्र.कु. कोमल • संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्पेन्द्र • RNI No.: RJHIN/2013/53539

दो हजार श्रमिकों को बांटे गए कंबल...

नशे से परिवार और बच्चों को बचाएं: बीके मुन्नी

श्रमिकों को कंबल वितरित करते हुए बीके मुन्नी, बीके भरत एवं अन्य। साथ में बैठे हुए श्रमिक माताएं एवं बहनें।

> जीवन में एक सकारात्मक बदलाव आ जाए तो निश्चित तौर पर उसका घर स्वर्ग बन सकता है।

शिव आमंत्रण आबू रोड। व्यक्ति धन से पहले शरीर और चरित्र से गरीब हो जाता है यदि वह हमेशा बुराईयों को ही अपना अस्तित्व समझता है। बुरी आदतों को कभी भी अपने जीवन में स्थान नहीं देना चाहिए। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज संस्था की कार्यक्रम प्रबन्धिका बीके मुन्नी ने व्यक्त किए। वे ब्रह्माकुमारीज संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की 50 वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में श्रमिकों के लिए कम्बल वितरण कार्यक्रम में बोल रही थी। उन्होंने कहा कि परमात्मा ने अपनी पहचान दी है उससे ही हमें सच की पहचान हो जाती है। जब हम अपने जीवन में राजयोग और ध्यान को स्थान देंगे तब जीवन में सकारात्मक बदलाव कर सकेंगे। इसलिए हमेशा अपने जीवन में मूल्यों को प्राथमिकता दें। मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करुणा ने कहा, हमारा प्रयास है कि हर घर और प्रत्येक व्यक्ति व्यसनमुक्त बनें। क्योंकि इससे आत्मा और शरीर दोनों ही खराब हो जाते है। सोशल एक्टिविटी ग्रुप के अध्यक्ष बीके भरत ने कहा, कि समाज की सेवा केवल रुपयों और पैसों से ही नहीं होती है। बल्कि किसी के जीवन में एक सकारात्मक बदलाव आ जाये तो निश्चित तौर पर उसका घर स्वर्ग बन सकता है। कार्यक्रम के दौरान श्रमिकों से हाथ उठवाकर नशामुक्त रहने के लिए संकल्प कराया गया। साथ ही बच्चों और परिवार के लोगों को भी नशा से बचने की अपील की गयी। इस दौरान करीब दो हजार श्रमिक उपस्थित थे। कार्यक्रम में बीके कृष्णा, बीके रमेश समेत कई लोग उपस्थित थे।

हजारों पौधे लगाकर राजयोग सीखने के लिए किया जागरूक

पौधारोपण करते हुए बीके संजीवनी एवम् अन्य भाई - बहनें।

शिव आमंत्रण सांगली,पुणे। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र के सांगली, पुणे के एन एच 27 पर पौधरोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें वहां कि सेवाकेन्द्र इंचार्ज बीके संजीवनी बहन, बीके शरमीला बहन और अन्य भाई-बहनों ने लगभग 1000 पौधा लगाया। और साथ में पर्यावरण सुरक्षा का संदेश देकर लोगों में आध्यात्म के प्रति भी जागरूक किया। सबने जीवन में बढ़ते दुःख-अशांति से निजात पाने के लिए राजयोग मेडिटेशन सीखने का भी लोगों से अपील किया। बहुतों ने इस विचार पर सहमति व्यक्त किए।

श्रीमद् भगवद गीता पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में जुटे सभी धर्मों के विद्वान

भगवद्गीता पर आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते अतिथि।

शिव आमंत्रण कुरुक्षेत्र। ब्रह्माकुमारीज कुरुक्षेत्र सेवाकेंद्र के विश्वशांति धाम में श्रीमद्भगवद गीता पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई। इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता राजयोगी बीके अमीरचंद भाई, मुख्य अतिथि महामंडलेश्वर स्वामी ज्ञानानंदजी, विशिष्ठ अतिथि ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी महाराज, विशिष्ठ वक्ता के रूप से फिनलैंड से सिस्टर सत्या सकोनन, मॉरिसिस प्रो. विश्वनाथ पाटिया, जापान से प्रो. सतो होरोकी, करनाल से प्रो. जीवन बक्शी, अहमदिया मुस्लिम जमात इंडिया से सिराज अहमद, श्री आशुतोष महाराज, श्री राजेंद्र राणा, डॉ. सुरेंद्र मोहन मिश्रा, कर्नाटक से बीके विणा,हैदराबाद से बीके त्रिनाथ, मुंबई से बीके राजीव और बीके रेश्मा उपस्थित थे।

दिव्य संस्कार गर्भ संस्कार कार्यक्रम का भव्य आयोजन

राजयोग से बच्चों में आते हैं दिव्य संस्कार

> शुभ संकल्पों से अपने गर्भ में पल रहे बच्चे को बिना किसी लिंग भेद के उसे सहर्ष स्वीकार करें और उसकी प्रशंसा करें

कार्यक्रम का दीप प्रज्जवलन कर शुभारंभ करते अतिथि

शिव आमंत्रण उदयपुर। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय मोती मगरी स्कीम सेंटर की ओर से गर्भ संस्कार का एक सुंदर कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉक्टर आनंद गुप्ता इंडियन मेडल मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉक्टर कमला कब्र रानी सीनियर गायनोकोलॉजिस्ट उदयपुर डॉक्टर कमलेश पंजाबी सीनियर गाईनेकोलॉजिस्ट उदयपुर आए। आने वाली सुंदर पीढ़ी व मुख्य बिंदु गर्भवती माताओं ने आने वाली पीढ़ी को सुंदर बनाने के लिए 9 माह तक गर्भ में पल रहे शिशु को सिर्फ संस्कार न देकर दिव्य संस्कार देने का शुभ संकल्प किया और इसी अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में मुंबई से पधारी डॉक्टर शुभदा नील ने (दिव्य गर्भ संस्कार की विशेषज्ञ) कुछ मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डाला। साथ ही योगा एक्सपर्ट डॉक्टर पुनीत मीणा भार्गव विभागाध्यक्ष पेसिफिक यूनिवर्सिटी ने गर्भवती महिला को योग प्राणायाम करने की महत्वता को समझाते हुए बताया कि गर्भवती बहनों को इसके महत्व को समझना होगा। गर्भवती का मतलब सिर्फ बहुत सारे हैवी डाइट खाना कुछ काम ना करना और बहुत आराम करना इस मानसिकता से ऊपर उठकर प्राणायाम और योग से शिशु और माता को होने वाले लाभ के बारे में जागरूक होना चाहिए।

पिछले अंक से क्रमशः

डायबिटीज का संपूर्ण उपचार

शिव आमंत्रण डायबिटीज का सम्पूर्ण उपचार डायबिटीज (DIABETES) शब्द में ही छिपा हुआ है। डायबिटीज अनेकानेक कारणों से होती है। यह एक मल्टीफेक्टोरियल डिसआर्डर है। इसलिए सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए उपचार करना आवश्यक है। इसलिए डायबिटीज का सम्पूर्ण उपचार के मुख्य 8 बातें को डायबिटीज (DIABETES) शब्द में छिपा हुआ है। आईये जानते है:-

- **D** DIET AND DEADDNETION (आहार तथा नशामुक्ति)
- **I** INJECTABLE AND URALDRUG (आवश्यक दवाईयां)
- **A** ANARENESS OF ITS SERIOUINESS (इसकी गंभीरता)
- **B** BEHAVIOURAL THERAPY AND MOTIVATION (संस्कार परिवर्तन के लिए प्रोत्साहन)
- **E** EXERCISE & PHISICALLY ACTIVE LIFE (शारीरिक व्यायाम तथा कर्मठ जीवन)
- **T** TIMELY TESTS & MONITORING (समयनुसार जाँच तथा निगरानी)
- **E** EDUCATION & EMPOWERMENT (स्वास्थ्य शिक्षा और सशक्तिकरण)
- **S** STRESS FREE LIVING & BALANCE OF LIFE (तनाव मुक्ति और संतुलित जीवन) ये सारे विषय का हम विस्तृत रूप से चर्चा करेंगे ताकि जीवन में इन्हें अमल में भी लाया जायें।

देखा जाता है अधिकतर व्यक्ति को डायबिटीज बीमारी का पता चलते ही अपने खानपान को लेकर चिंतित हो जाते है। सारा दिन चिंता लगी रहती है, क्या खाये क्या न खाये। क्योंकि आज तक यही मान्यता चली आ रही है की डायबिटीज में बहुत सारी चीजों का परहेज रखना होता है। कुछ दशक पहले तो डायबिटीज मरीजों को कुछ भी खाने पीने नहीं दिया जाता था। इसलिए की वे जो भी कुछ खाते है वह शुगर बनकर पैशाब से निकल जा रहा है और देखा जाता है कुछ साल के बाद वह मरीज डायबिटीज की बीमारी से मरे या न मरे बिना खाये पीये मर जाता था।

आज सभी वैज्ञानिकों की मान्यता यही है कि डायबिटीज की मरीज एक साधारण व्यक्ति की तरह सब कुछ खा सकता है, परन्तु भोजन संतुलित होना चाहिए डायबिटीज ग्रसित व्यक्तियों को भलि-भांति पता होना चाहिए भी क्या खाना चाहिए, कब खाना चाहिए, कितना खाना चाहिए, और कैसे खाना चाहिए? जब तक वे भोजन संबंधित सारी बातें न समझे उनका ब्लड शुगर कभी नियंत्रित नहीं हो सकता है भले कितनी भी अच्छे अच्छी दवाई क्यों न वे लेते हो। तो आइए हम चर्चा करते है कि आज हम सभी को स्वास्थ्य कारक भोजन की आवश्यकता क्यों है?

आज से 2500 वर्ष पहले HIPPOCKATES जिन्हें FATHER OF MEDICINE कहा जाता है कहके गये है LET FOOD BE THY MEDICINE है अर्थात् हमारा भोजन दवाई की तरह होना चाहिए। वास्तव में हेल्दी डाईट स्वास्थ्य कारक भोजन सभी के लिए दवाई के समान है। आज की अधिकतर बिमारियों का कारण हमारा भोजन ही है। 21 CENTURY OBESIFY (मोटापा) एक बड़ी समस्या बनती जा रहा है। मोटापा का मुख्य कारण भी अस्वास्थ्यकर जीवनशैली तथा हमारा असंतुलित आहार ही है।

स्वाथ्यकर भोजन HEALTHY DIET हेल्दी डाइड क्या है?

स्वास्थ्य कर भोजन उसे कह सकते है जिसके नियमित सेवन से हमारा स्वास्थ्य ठीक रहता है। इसे हम बैलेंस डाइड कहते है व संतुलित आहार भी कह सकते है। डायबिटीज की बिमारी में व्यक्ति एक साधारण व्यक्ति की तरह स्वास्थ्यप्रद व संतुलित भोजन स्वीकार करना चाहिए। क्रमशः

यहां करें संपर्क बीके जगजीत मो. 9413464808 पेशेंट रिलेशन ऑफिसर, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू, जिला- सिरोही, राजस्थान

आचार्य लोकेश मुनि ने की दादी जानकी को भारत रत्न देने की मांग की... रायपुर में आध्यात्म का महाकुंभ

युवाओं में श्रेष्ठ संस्कार तराश रही ब्रह्माकुमारी बहनें: राज्यपाल

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, दादी जानकी से मिलते हुए। स्टेडियम में उपस्थित 15 हजार से अधिक नागरिक

शिव आमंत्रण > रायपुर/निसं। आज की युवा पीढ़ी हिंसा और भौतिकता की तरफ भाग रही है। ऐसे में भारत के उज्जवल भविष्य के लिए युवाओं को नैतिक मूल्यों से पोषित करना पड़ेगा। उक्त विचार राज्यपाल अनुसुईया उइके ने व्यक्त किए। वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा इंडोर स्टेडियम में आयोजित सर्व मंगल आध्यात्मिक महाकुम्भ में उपस्थित लोगों को संबोधित कर रही थीं। आगे उन्होंने कहा कि बढ़ते तनाव और निराशा में आध्यात्मिक ज्ञान अमृत के समान है। सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के साथ आत्मा से परमात्मा का मिलन कराने में ब्रह्माकुमारीज संस्थान का कार्य सराहनीय है।

आज से ही जीवन को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लें-दादी जानकी

ब्रह्माकुमारीज संस्था की मुख्य प्रशासिका 104 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि यह जीवन एक यात्रा है। इसमें ना तो किसी को दुख देना है और न ही दुख लेना। सारे विश्व में लोगों को शांति चाहिए।

शांति, पवित्रता, धैर्यता, नम्रता और मधुरता ये मनुष्य के जीवन के आभूषण हैं। मीठा बोलना चाहिए। अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक ने डॉ. लोकेश मुनि ने कहा कि लाखों करोड़ों खर्च करके जो कार्य सरकार नहीं कर सकती वह ब्रह्माकुमारीज संस्थान कर रहा है। भारत सरकार से दादी जानकी भारत रत्न देने की मांग करता हूं। इस अवसर पर ज्ञानामृत पत्रिका के प्रधान सम्पादक बीके आत्मप्रकाश,ब्रह्माकुमारीज संस्था के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, शांतिवन प्रबन्धक बीके भूपाल, चौबे कालोनी की प्रभारी बीके सविता, प्रयागराज क्षेत्र की प्रभारी बीके मनोरमा, ब्रह्माकुमारीज के जनसम्पर्क अधिकारी बीके कोमल, छत्तीसगढ़ सेवाकेन्द्रों की प्रभारी ब्रह्माकुमारी कमला, इंदौर जोन की कोआर्डिनेटर बीके हेमा, धमतरी की बीके सरिता, टिकरापारा बिलासपुर की प्रभारी बीके मंजू, भिलाई की प्रभारी बीके आशा समेत कई लोगों ने अपने अपने विचार व्यक्त किए।

दादी जी का आशीर्वाद हम सभी को मिलता रहे : भूपेश बघेल

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी की 104 साल की उम्र में भी सक्रियता किसी चमत्कार से कम नहीं है। छत्तीसगढ़ शांति का टापू है। आज पूरे देश में आग लगी है लेकिन उसका असर हमारे प्रदेश में नहीं है। यह ब्रह्माकुमारीज सरीखे संस्थान तथा ऋषि मुनियों की तपस्या का परिणाम है। अच्छे लोगों से हमेशा अच्छा समाज बनता है। ब्रह्माकुमारी संस्थान छत्तीसगढ़ के कोने-कोने में कार्य म करके शांति फैलाने का कार्य कर रही है। दादीजी की विनम्रता प्रेरणा देने वाली है। दादी सौ साल की उम्र पार चुकी है। इसलिए शतायु की कामना भी नहीं की जा सकती। ऐसे में दादी जी के लिए अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूं ताकि उनका आशीर्वाद सदैव मिलता रहे।

सार समाचार

माधोपुर में गीतापाठशाला का उद्घाटन

पाठशाला का उद्घाटन करते बीके शकुन्तला बहन एवं अन्य।

शिव आमंत्रण > चहल/हरियाणा। माधोपुर गाँव में ब्रह्माकुमारीज पाठशाला का उद्घाटन बीके शकुन्तला बहन के कर कमलों से किया गया। जहां सभी भाई और बहनें बहुत ही खुशी और उमंग का महौल देखने को मिला। इस कार्यक्रम में बीके पुनम, बीके मीनू, बीके अशोक, बीके चंदा और बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

बाबा शिव को बहनों का जीवन समर्पित

केक काटकर खुशी मनाते हुए सभी भाई-बहनें।

शिव आमंत्रण > कोली। परमात्मा शिव को अपना जीवन साथी बनाकर समाज सेवा और विश्व सेवा में अपना जीवन 4 बहनें बीके वन्दना, बीके दीपा, बीके ज्ञानी, बीके लक्ष्मी ने समर्पित कर दिया। इस खुशी के मौके पर केक काटते हुए मनोरमा बहन, पार्वती बहन, चन्द्रावती बहन, एएनए मैनेजमेंट कॉलेज चैयरमेन, कोको कोला कम्पनी बिजनेसमेन लधानी।

मेरा देश, मेरी शान कार्यक्रम से दिया परमात्म संदेश

मेरा देश मेरी शान कार्यक्रम में भाग लेते बीके भाई-बहन, अन्य।

शिव आमंत्रण > ग्वालियर/मप्र। 'मेरा देश मेरी शान' अभियान के अंतर्गत शहर में अनेक कार्यक्रम आयोजित किया गया। बीके आदर्श बहन ने कहा कि हर रोज सकारात्मक चिंतन के साथ सुबह उठेंगे तो पूरे दिन उत्साहित व प्रसन्नचित्त रहेंगे। कार्यक्रम के शुभारम्भ में लश्कर सेवाकेंद्र संचालिका बीके आदर्श ने सभी अभियान यात्रियों का स्वागत किया एवं इस अभियान के माध्यम से प्लास्टिक मुक्त भारत बनाने के लिए लोगों को आव्हान किया तथा शुभकामनाएं दीं। बीके ज्योति बहन ने इस अभियान का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा कि स्वर्णिम भारत के पुनर्निर्माण के लिए भारतीय मूल्यों को बढ़ावा देना, बाहरी और आंतरिक स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करना, आंतरिक शांति और उत्थान के लिए पारस्परिक समझ का विकास करना है।

कोल्हापुर से बीके दीपा ने कहा वर्तमान पीढ़ी अपनी मूल संस्कृति को भूलती जा रही है हमें युवा पीढ़ी को ऐसा करने से रोकना होगा। महाराष्ट्र से बीके ललिता ने कहा कि भारत दुनिया का सबसे खुबसूरत देश है यहां पर विभिन्न संस्कृतियां, भाषाएं हैं। इन सबमें अनेकता होते हुए भी एकता है। यहां की संस्कृति, यहां का प्राकृतिक सौंदर्य सबकुछ निराला है जिसे हम सब को अक्षुण्य रखना है। बीके तुलेश ने संकल्प दिलाया एवं फॉर्म भरवाए। इस अभियान में बीके प्रियंका, बीके संतोष भाई (माउंट आबू), बीके हरी, बीके ज्योति बहन ने अपनी शुभकामनायें व्यक्त की।

खुशनुमा जीवन राजयोग द्वारा खुशनुमा जीवन जीने की कला विषय पर सम्मेलन का आयोजन

ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर सकारात्मक परिवर्तन आया: कुमार

> यह जानना जरूरी है कि आत्मा का पिता परमात्मा निराकार ज्योति बिंदू है।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बीके राजू व अन्य अतिथि।

शिव आमंत्रण > करनाल। प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेक्टर 7 स्थित सेवा केंद्र में राजयोग द्वारा खुशनुमा जीवन जीने की कला विषय पर आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। माउंट आबू से कृषि व ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी भ्राता राजू भाई ने कहा कि अगर हम अपने जीवन में सच्ची व स्थाई खुशी चाहते हैं तो हमें अपने वास्तविक स्वरूप को जानना जरूरी है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीसीएचएयू के रिजनल निदेशक डा. धर्मवीर यादव ने कहा कि जैसा हम अन्न खाते हैं वैसा हमारा मन हो जाता है। एनडीआरआई से पहुंचे प्रिंसिपल वैज्ञानिक डा. नरेश कुमार ने कहा कि कार्यक्रम में हाई लेवल एनर्जी फील कर रहा हूं। ऐसा महसूस हो रहा है कि इस दुनिया में नहीं फरिश्तों की दुनिया में हूं। सीएसएसआरआई से प्रिंसिपल डा. प्रवीण कुमार ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज से जुड़कर उनके जीवन में बहुत सकारात्मक परिवर्तन आया है। चाइल्ड एंड वुमेन वेलफेयर आफिसर मधु पाठक ने कहा कि यह संस्था हमारे विचारों का परिवर्तन करती है। बीके प्रेम ने कहा कि अगर हम खुशनुमा जीवन जीना चाहते हैं तो हमारी भावना लेने की बजाए देने की होनी चाहिए। डा. डी शर्मा, डा. पीके जैन, डा. केके चावला उपस्थित थे।

अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का भव्य आयोजन...

वर्तमान समय का प्रतिबिंब है गीता का संदेश

सिरसा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके बिंदू, अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में हरियाणा के उप मुख्यमंत्री दुष्यन्त चौटाला को ज्ञान प्रदर्शनी समझाया।

बाल कलाकारों को एसडीएम जयवीर सिंह ने किया पुरस्कृत।

शिव आमंत्रण सिरसा। हरियाणा के सिरसा में जिला प्रशासन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के उपलक्ष्य में चौधरी देवी लाल विश्व विद्यालय के मल्टीपरपज हॉल में त्रिदिवसीय विशाल समारोह का भव्य आयोजन हुआ, जिसमें सिरसा जिला की विभिन्न प्रशासनिक, धार्मिक तथा समाज सेवी संस्थाओं और स्कूली बच्चों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ को भी विशेष तौर पर आमंत्रित किया गया था जहां सिरसा सेवाकेन्द्र द्वारा आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। इस दौरान आयोजन स्थल का अवलोकन करने आए हरियाणा के उपमुख्यमंत्री दुष्यन्त चौटाला, सिरसा के डी सी अशोक गर्ग, एस डी एम भ्राता जयवीर यादव, डी आई पी आर ओ अमित पवार ने विशेष तौर पर विजिट किया और इस प्रदर्शनी को मानवीय मूल्यों के प्रति महत्वपूर्ण मार्गदर्शन बताया। जिला प्रशासन द्वारा आयोजित इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में बीके बिन्दु ने उद्बोधन देते हुए कहा, कि गीता में वर्णित प्रत्येक व्यक्तित्व एवं दृष्टांत वर्तमान समय का ही प्रतिबिम्ब है जिसे हमें गहराई से समझते हुए अपने जीवन में जरूरी परिवर्तन करने की आज आवश्यकता है। इसके पश्चात् सेवाकेन्द्र द्वारा नशे से होने वाले नुकसान के प्रति जागरूक करने हेतु एक नुक्कड़ नाटिका की प्रस्तुति भी गई, जिसमें नन्हे मुन्ने बाल कलाकारों ने अपनी प्रभावशाली प्रस्तुति से लोगों को प्रेरित किया। इसके पश्चात दुष्यन्त चौटाला ने भी बीके बिन्दु को मोमेन्टो देकर सम्मानित किया। एस डी एम जयवीर यादव ने बाल कलाकारों को मोमेन्टो देकर उनका उत्साहवर्धन किया।

ओडिशा: दादी जानकी ने किया कई भवनों का उद्घाटन

दीप प्रज्जवलित व कार्यक्रम का उद्घाटन करते दादी जी व अन्य

शिव आमंत्रण ब्रह्मपुर (ओडिशा)। संस्था प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी ओड़िशा दौरे पर थी जहां कई कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति से ब्रह्माकुमारीज के सदस्यों को अपने आशीर्वचनों से सभी को लाभान्वित किया और कई नवनिर्मित भवनों का भी शुभारम्भ किया। ब्रह्मपुर में दादी जी के आगमन पर लोकायुक्त सदस्य देवव्रत स्वाईं, फॉरेस्ट कंजरवेटर सुरेश पंथ, डी.एफ.ओ. अम्लान मिश्र, कलेक्टर भी.ए. कुलांग, ब्रह्मपुर सबज़ोन प्रभारी बीके मंजू तथा रिट्रीट सेन्टर की प्रभारी बीके माला ने दादी का स्वागत करने ब्रह्मपुर हवाई पट्टी पहुंचे। जिसके पश्चात् हवाई पट्टी से 21 पुलिस की गाड़ियों की काफिले के साथ दादी जानकी को प्रभु उपहार रिट्रीट सेन्टर तक लाया गया। आगे प्रभु उपहार रिट्रीट सेन्टर का उद्घाटन दादी जानकी के करकमलों से सम्पन्न हुआ, जिसके पश्चात् रिट्रीट सेन्टर में बने नवनिर्मित शांति स्तम्भ, बाबा का कमरा, आध्यात्मिक आर्ट गैलरी, साहित्य विभाग तथा साकार ब्रह्मा बाबा की स्मृतियों के हिस्ट्री हॉल का शुभारम्भ भी सभी वरिष्ठ सदस्यों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। दादी के आगमन पर स्वर्णिम युग के लिए परमात्म शक्ति थीम के तहत सार्वजनिक कार्यक्रम का आगाज़ हुआ, जिसमें अतिथि के तौर पर विधायक डॉ. प्रदीप पाणिग्राही, देवव्रत स्वाईं की विशेष मौजूदगी रही। दादी जानकी ने अपने आशीर्वचन दिए। वहीं लंदन से आई वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके जेमिनी ने भी अपनी शुभ आशाएं व्यक्त की। कार्यक्रम में 31 बहनों का समर्पण समारोह भी हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जहां दस हज़ार की संख्या में लोग मौजूद हुए।

अभियान मेरा भारत स्वर्णिम भारत कार्यक्रम का आयोजन...

मन की स्वच्छता और पवित्रता से होगा नए युग का आगाज

समर्पित बीके भाई-बहनों का किया सम्मान, लोगों को परमात्म संदेश दिया गया

मेरा भारत, स्वस्थ भारत कार्यक्रम में उपस्थित बीके भाई और बहनें।

शिव आमंत्रण फरीदाबाद। ब्रह्माकुमारीज के फरीदाबाद संजय एन्कलेव सेक्टर 51 स्थित सेवाकेन्द्र द्वारा 10 दिवसीय मेरा भारत स्वर्णिम भारत, स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत अभियान का बड़ी धूमधाम से कार्यक्रम आयोजन किया गया है। अभियान के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विनीत कुमार एसएचओ ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज हम सब के मन में बहुत बुराईया आ गई है। स्वार्थ से ऊपर उठकर अपनेपन की भावना विकसित करने की आवश्यकता है। विशिष्ट अतिथि रतनलाल बाबा बंफानी युग निर्माण मंच ने कहा कि यह कार्य विशेष सराहना को। जवाहर कालोनी फरीदाबाद की निदेशिका बीके पूजा ने सभी को शुभकामनाएं दी। स्थानीय संचालिका बीके ज्योति ने सभी का स्वागत करते हुए सभा में उपस्थित सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया तथा सभी को कोई भी एक बुराई छोड़ने का संकल्प करवाया तथा सभी को निर्व्यसनी रहने की प्रतिज्ञा कराई। मंच का संचालन बीके पूजा द्वारा किया गया। इस अभियान में 15 यात्री थे। 10 दिनों में 108 कार्यक्रम सम्पन्न हुए। जिनमें 20 वर्गों में से सभी वर्गों के लोगों को संदेश दिया गया। जिनमें स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, पुलिस स्टेशन, समाज सेवी संस्थाएं, बैंक आदि में कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस अभियान के अन्तर्गत 45,000 लोगों को लाभ प्राप्त हुआ तथा साथ ही साथ यह अभियान अब पूरे फरीदाबाद में धूम मचा रहा है।

समस्या समाधान

[ब्र.कु. सूरज भाई]

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

पिछले अंक से क्रमशः

मन अगर शक्तिशाली हो तो समस्याएं समाप्त हो जाएंगी

शिव आमंत्रण समस्याएं और कुछ नहीं कमजोर मन की रचना है अगर मन को शक्तिशाली बना दिया जाए, पॉजिटीव बना दिया जाए तो सभी समस्याएं नष्ट हो जाएगी। जब ये बात हमने बाबा के महावाक्यों में सुनी थी, दिल्ली में एक प्रैक्टिकल केस हुआ। दो आईस्क्रिम वाले पास-पास आईस्क्रिम बेच रहे थे, एक आईसक्रिम वाले ने दूसरे आईसक्रिम वाले के ग्राहक को बुला लिया, मेरी अच्छी है इधर आ जाओ। पहला आईसक्रिम वाले को गुस्सा आ गया लड़ाई शुरू कि वाद-विवाद हो गया। चाकू से काटते थे उन दिनों आईसक्रीम, आजकल ऐसी नहीं होती थी उसने उसको चाकू मार दिया। दिल पे लग गया उसकी तुरन्त मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु हुई और वो आजीवन जेल में चला गया, दो परिवार नष्ट हो गया परेशानियों में पड़ गये। शुरू कहाँ से हुई क्रोध से हुई, कमजोर मन था इसलिए ये कमजोर मन में उत्पन्न हुई। मन शक्तिशाली रहता वह शांत रहता वो कहता अच्छा भाई उससे ले लो। तो कमजोर मन को हमें शक्तिशाली बनाना है, समस्या भिन्न-भिन्न तरह की आती है।

खानपान शुद्ध और सात्विक हो तो मन शक्तिशाली हो जाएगा

आजकल बीमारियों की समस्या ज्यादा उग्र रूप लेती जा रही है। उसमें भी डब्लूएचओ ने डिक्लेयर कर दिया है। 2020 में डिप्रेशन महामारी का रूप ले लेगी। मुझे याद है आज से दस साल पहले हृदय रोग को महामारी बोला था और पाँच साल से कैंसर महामारी के रूप में बढ़ती जा रही है। उसका कारण खानपान है और खानपान पे डाले जाने वाले कीटनाशक दवाईयां खेतों में और जो रिफाईन तेल माताएं खाने में प्रयोग करती है वो भी बहुत नुकसानदायक है। मेरा सबसे पहला उत्तर एक है कि तन को कितनी भी बीमारियां क्यों न आये, अगर हम मन को बीमार न करें तो तन कि बीमारी जल्दी विदाई ले लेगी। लेकिन हम मन को बीमार कर देते है तो बहुत भारी पड़ता है।

तन की बीमारी कोई बड़ी बात नहीं लेकिन मन कभी भी बीमार न होने पाए

एक डॉ. बहन आयी कहाँ मेरे पति को प्रोस्टेट में शुरूआत हुई है कैंसर की, वो खुद सर्जन है ये बहन सर्जन है हम सब जानते है वो डॉक्टर भी जानता है जिसको प्रोस्टेट में कैंसर शुरू हुआ उसको बढ़ने में भी 15 साल लगेंगे और इसको अभी ठीक किया जा सकता है, लेकिन कहाँ वो डॉक्टर आधा मर गया। चुप हो गया, उदास रहने लगा वो उसको प्रोग्राम में नहीं ले कर आई वो पश्चाताप कर रही थी कि काश मैं उसको लेकर आ जाती तो पुनः जिन्दा हो जाता, जो आधा मरा है, ये जो बात है सभी भाई-बहनें इस चीज को याद कर ले बीमारी कितनी भी क्यों न आ जाये, मन को बीमार नहीं करना है तो अनेक चीजें ठीक हो जाएगी। आप भी भगवान के बच्चे बन जाओ तो ये सभी चिंताओं से बच पाओगे। ओ केयर करेगा आपकी इस सत्य को पहचान लो।

अपनी समस्याएं प्रभु अर्पण कर दो तो समस्याएं समाप्त हो जाएंगी

अपनी मन की सारी समस्याएं अपनी टेंशन, अपनी चिंताएं और अपनी बीमारियाँ भी उसको अर्पित करो। ये कला सिखनी है, भक्ति में बहुत गाया है तन मन सब तेरा। अर्पण कर दो अपने मन की चिंताओं को, अर्पण कर दो अपने मन की समस्याओं को, अपनी बीमारियों को, वो बहुत मदद करेगा वो सच्चा मात-पिता है, वो बहुत आपकी केयर करेगा, मेरा अनुभव है मेरे आँख में तकलीफ हुई है एक साल से कभी-कभी ज्यादा दर्द हो जाता है इसमें दवाई आदि उसकी होती नहीं मैं क्या करता हूँ पता है मैं शिव बाबा को आह्वाहन करता हूँ। मैं अभी किया, परसों भी किया बहुत अच्छी तरह, गर्मी से दर्द हो जाता है ठण्ड से नहीं होता, एक प्रोग्राम में गया वहाँ बहुत गर्मी थी आँख में दर्द हो गया। क्रमशः...

सार समाचार

गीता युद्ध शास्त्र नहीं, योग शास्त्र है:वीणा

शिव आमंत्रण > पन्ना/मप्र.।भोपाल से आरम्भ हुआ गीता महासम्मेलन अभियान की यात्रा का पड़ाव पन्ना में सम्पन्न हुआ, जिसको कर्नाटक (सरसी) से पधारी राजयोगिनी वीणा दीदी ने संबोधित किया। सभी को संबोधित करते हुये श्रीमद् भगवत् गीता का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करते हुए कहा कि, गीता युद्ध शास्त्र नहीं, योग शास्त्र है। जब तक हमारे अन्दर आत्म-भाव नहीं आयेगा तब तक हम ईश्वर से ताकत नहीं ले सकेंगे। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से कुसुम सिंह महदेले, मध्य प्रदेश शासन, तपस्या जैन, सी.ई.ओ., मोहन लाल कुशवाहा, अध्यक्ष, नगर पालिका पन्ना, बबलू पाठक, चौदहा सर, प्राचार्य, बरसात खान, सदर, निशा जैन उपस्थित थे।

ब्रह्मा बाबा का 143वां जन्मदिवस मनाया

शिव आमंत्रण > गोरखपुर। दादा लेखराज का 143वां बर्थडे गोरखपुर, मोहद्दीपुर सेंटर पर मनाया गया । जिसमें इंटरनेशनल भजन गायक नंदू मिश्रा जी उपस्थित हुए, मंचपर उपस्थित डॉ. विजय पांडेय, डॉ साधना पांडेय, नंदू मिश्रा जी, बंशीधर भाई, रामेश्वर भाई, बीके लालबहादुर भाई, बीके गंगासागर भाई ,बीके मधुकर भाई, बीके पारुल बहन, बीके दुर्गा बहन सेण्टर प्रभारी बीके पुष्पा बहन तथा सभी स्थानीय भाई बहनो द्वारा मोमबत्ती जला कर तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम के द्वारा धूम धाम से मनाया गया।

मंडल आयुक्त को दिया शिव आमंत्रण

शिव आमंत्रण > छर्रा/उत्तरप्रदेश। मंडलायुक्त भ्राता अजयदीप सिंह को परमपिता परमात्म शिव का संदेश देने के पश्चात् शिव आमंत्रण मासिक समाचार पत्र भेंट करते हुए बीके रेखा बहन व बीके गीता।

विधायक को ईश्वरीय सौगात प्रदान की

शिव आमंत्रण > दतिया (उत्तर प्रदेश)। विधायक भ्राता महेश चंद्र गुप्ता जी को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए बीके शशिबाला बहन व बीके रमा बहन।

दादी जानकी ने किया शिलान्यास, पांच हजार लोगों की क्षमता का होगा हॉल...

5 एकड़ में बनेगा शिव शक्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर

> जो अच्छी बात है उसे कभी न भूलो। खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि परमात्मा मुझसे 104 की उम्र में सेवा करा रहा है : दादी जानकी

शिव आमंत्रण > इंदौर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने इंदौर मोरिपाल नेमावर रोड में बनने वाले शिव शक्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर की नींव रखी। दादी ने सबसे पहले शिव ध्वजारोहण किया, इसके बाद शिलालेख पट्टिका का उद्घाटन करके रिट्रीट सेंटर की आधारशिला रखी।

इसके बाद दादी ने अपने हाथ से गंगाजल चढ़ाकर और नारियल फोड़कर भूमिपूजन कार्य पूर्ण किया। साथ ही मंत्रोच्चार के बीच ईंट को गंगाजल से पवित्र कर जमीन में अर्पित किया। गुब्बारा उड़ाकर प्रेम, एकता, शांति का संदेश दिया। कार्यक्रम में दादी ने तीन बार ओम शांति का जयघोष कराते हुए कहा कि यहां से हजारों लोगों को जीने की नई राह मिलेगी।

इंदौर जोन की जोनल निदेशिका बीके आरती ने कहा कि यहां से इंदौर वासियों को जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण निःशुल्क दिया जाएगा। सभी के सहयोग से जल्द बनकर समाज के लिए समर्पित कर दिया जाएगा।

इसके बाद दिगंबर पब्लिक स्कूल में पब्लिक में आयोजित कार्यक्रम में हाईकोर्ट की ग्वालियर खंडपीठ के पूर्व न्यायाधीश बीडी राठी, दिगम्बर स्कूल के डायरेक्टर सुधाकर मेढ़के, सिंधु ताई मेढ़के, माउंट आबू से पधारे सीए बीके ललित, ब्रह्माकुमारीज आबू रोड शांतिवन के प्रबंधक बीके भूपाल भाई, आवास निवास के प्रभारी बीके देव भाई, मोटिवेशनल स्पीकर बीके नारायण भाई, पीथमपुर से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सुनीता, बीके दीपाली, बीके द्रोपती, बीके आयुषी, माउंट आबू से पधारे बीके भाई-बहनें सहित सात हजार से अधिक लोग उपस्थित रहे।

रिट्रीट सेंटर की नींव रखते हुए दादी जानकी एवं उपस्थित मान्यवर।

रिट्रीट सेंटर में ये रहेगा खास...

- 05 एकड़ में बनेगा रिट्रीट सेंटर
- 05 हजार लोगों की क्षमता का हॉल
- 700 से अधिक लोगों के रहने की व्यवस्था
- 2000 की क्षमता के तीन से अधिक सेमिनार हॉल
- 05 से अधिक योग अनुभूति कक्ष
- 3डी शो से आत्मा-परमात्मा का सत्य ज्ञान
- म्यूजिक लेजर फाउंटेन के माध्यम से खेल खेल में राजयोग का ज्ञान दिया जाएगा।
- गोशाला का भी बनाई जाएगी।
- पूरा रिट्रीट सेंटर इको फ्रेंडली बनाया जाएगा।
- सौर पैनल से बिजली सप्लाई की जाएगी।
- साथ ही गार्डन, पार्क बनाये जाएंगे।
- कई प्रदेशों के औषधियों के पेड़ लगाए जाएंगे।
- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी से बताई जाएगी जीवन जीने की कला।

इंदौर जोन के स्वर्ण जयंती समारोह में 20 बेटियों ने शिव संग जोड़ी जीवन की प्रीत, वरमाला पहनाकर बनाया जीवन साथी

बॉस्केटबाल स्टेडियम में हजारों लोगों के बीच दादी जानकी जी की उपस्थिति में 20 बहनों ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का संकल्प लिया।

शिव आमंत्रण > इंदौर/मप्र। ठसाठस भरे बॉस्केटबाल ऑडिटोरियम में मौजूद पांच हजार से अधिक लोग। माउंट आबू से पधारे 108 बाल ब्रह्मचारी भाई-बहन। सौ से अधिक ब्रह्माकुमारी बहनें और इन सबके बीच आध्यात्म की प्रेरणापुंज दादी जानकी की मौजूदगी में 20 बेटियों ने परमात्मा शिव को वरमाला पहनाकर अपना जीवन साथी बनाया। साथ ही जीवनभर ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करते हुए समाजसेवा औ विश्व कल्याण का संकल्प लिया। मौका था इंदौर जोन के दो दिवसीय स्वर्ण जयंती समारोह का। इसमें मप्र के उच्च शिक्षा मंत्री जीतू पटवारी ने कहा कि यहां से जुड़कर हजारों लोगों का जीवन बदला है। महोत्सव में दिव्य जीवन कन्या छात्रावास की कन्याओं ने प्रस्तुतियों से समां बांध दिया। इस दौरान माउंट आबू से बीके आत्मप्रकाश, बीके डॉ. सविता, जोनल निदेशिका बीके कमला, क्षेत्रीय समन्वयक बीके हेमलता, मीडिया प्रभारी बीके अनीता, बीके ऊषा सहित पधारे बीके भाई-बहनें मौजूद रहे।

ओ.आरसी का 19वां वार्षिकोत्सव...

भागदौड़ भरी जिंदगी में सुकून दे रहा संस्थानः चौबे

ओआरसी के 19वें वार्षिकोत्सव पर उपस्थित जन समूह एवं अतिथि का स्वागत किया

दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय राज्यमंत्री अश्विनी कु चौबे, बीके बृजमोहन।

शिव आमंत्रण गुरुग्राम। विश्व नव निर्माण के लिए समर्पित है ब्रह्माकुमारीज संस्था। उक्त विचार माननीय राज्यमंत्री, अश्विनी कुमार चौबे, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने भोड़ाकलां स्थित ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर के 19 वें वार्षिक उत्सव पर व्यक्त किए। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उन्होंने कहा, कि संस्था विश्व में मानवता के चारित्रिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास के द्वारा नये मापदण्ड स्थापित कर रही है। उन्होंने कहा, कि श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों को जीवन में धारण करना ही वास्तव में धर्म है। भारत सदैव धर्मनिष्ठ राष्ट्र रहा है। जिसको फिर से ब्रह्माकुमारीज द्वारा पुनर्स्थापित किया जा रहा है। उन्होंने कहा, कि बाहरी स्वच्छता के साथ-साथ मन और बुद्धि की स्वच्छता भी जरूरी है। पटौदी के विधायक सत्य प्रकाश ने अपने उद्बोधन में कहा, कि मैं काफी समय से ओ.आर.सी से जुड़ा हुआ हूं। मैं जब भी जीवन की परिस्थितियों से विचलित हुआ, तब-तब यहाँ आकर शांति का अनुभव करने आता रहा।

सोहना के माननीय विधायक, संजय सिंह ने अपनी शुभ भावनाएं प्रकट करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था में नारी शक्ति की भूमिका अग्रणी है। नारी शक्ति सदैव ही महान रही है। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री दिव्या कुमार खोसला ने कहा, मैं तीन वर्षों से संस्था से जुड़ी हूं। राजयोग के अभ्यास से मेरी आंतरिक शक्ति का विकास हुआ है। उन्होंने कहा कि ओ.आर.सी में आते ही मुझे स्वर्ग की अनुभूति होती है। इस अवसर पर राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण मंच की सदस्य न्यायमूर्ति दीपा शर्मा ने कहा, अंतर्राष्ट्रीय अभिनव सुनवाई केन्द्र, ग्रेटर नोएडा के अध्यक्ष प्रो. नागेन्द्र, राज्य सतर्कता ब्यूरो के महानिरीक्षक सुभाष यादव, संस्था के अतिरिक्त महासचिव बी.के.बृजमोहन, कार्यक्रम में ओ.आर.सी की निदेशिका बीके आशा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में दिल्ली एन.सी.आर के 5000 से अधिक लोगों ने शिरकत की। ओआरसी की सेवाओं से लोग अभिभूत हुए।

यौगिक खेती को तेजी से अपना रहे लोग, फसलों के साथ अब सब्जियां भी उगा रहे

बिना खाद के उपजाया हुआ फल सब्जी दिखाते हुए बीके लाई बहन।

शिव आमंत्रण पठानकोट। पंजाब के पठानकोट सेवाकेंद्र से विष्णुनगर राजयोग सेवाकेंद्र द्वारा तपोवन की खेती में योग का प्रयोग करने के बाद ऐसे ढेर सारे पपीता, करेले, बिन्स, साग पैदा हुये। मुख्य बात इसमें अंग्रेजी खाद बिल्कुल नहीं डाली गई है।

परमात्म स्मृति से नए साल का किया स्वागत

कार्यक्रम में शिरकत करते अतिथि।

शिव आमंत्रण फरीदाबाद। ब्रह्माकुमारीज़ वरदानी भवन सेक्टर 21 में नव वर्ष के उपलक्ष्य पर बहुत ही सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि श्री चांद जैन व कुसुम जैन (मैनेजिंग डायरेक्टर ऑफ ओसवाल ग्रुप इंडस्ट्रीज) पधारे। इस कार्यक्रम में बीके हरीश दीदी ने सभी भाई बहनों को नव वर्ष की शुभकामनाएं दीं व संबोधित किया, बीके प्रीति दीदी न्यू ईयर फॉर न्यू सफलता के बारे में सभी को प्रेरणा दी व बीके ज्योति दीदी ने भाई बहनों को राजयोग द्वारा परमात्म अनुभूति का अनुभव करवाया।

उद्घाटन मेडिटेशन सेवाकेंद्र का फीता काट कर किया शुभारंभ

नए सेवाकेंद्र से लोगों को मिलेगा नया जीवन

नवनिर्मित राजयोग भवन का उद्घाटन समारोह

शिव आमंत्रण बलरामपुर। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर में नवनिर्मित ब्रह्माकुमारीज सेवा केंद्र का उद्घाटन भिलाई से पधारी बीके आशा, सरगुजा संभाग की संचालिका वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके विद्या, जनपद पंचायत सीतापुर के उपाध्यक्ष शैलेश सिंह एवं बीके राम के कर कमलों द्वारा रिबन काटकर संपन्न हुआ। बीके आशा ने इस मौके पर कहा, कि इस नए सेवाकेंद्र द्वारा बलरामपुर एवं इसके आसपास के क्षेत्रों के वासियों को राजयोग मेडिटेशन एवं आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा सुख शांति की किरणों से जीवन का मार्ग प्रकाशमान हो जाएगा। इसके पश्चात आमंत्रित मुख्य अतिथियों एवं ब्रह्मावत्सो द्वारा नए सेवा केंद्र में शिव ध्वजारोहण कर संगठित रूप से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास किया गया। बीके आशा द्वारा ईश्वरीय सौगात देकर हनुमान मंदिर के ट्रस्टियों का सम्मान किया गया। इस उद्घाटन अवसर पर बड़ी संख्या में ब्रह्माकुमारीज संस्था से जुड़े लोग तथा स्थानीय लोग उपस्थित थे। इस सेवाकेन्द्र पर राजयोग ध्यान के अलावा कई कार्यक्रम होंगे।

स्व प्रबंधन

[बीके ऊषा]

[illegible] प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

सतयुगी सृष्टि में सभी का जन्म पवित्रता के बल से होता है

पिछले अंक से क्रमशः

शिव आमंत्रण आज कई लोग यह भी कहते है कि ब्रह्माकुमारियाँ अपनी वृत्तियों का दमन करती है। नहीं। हम दमन नहीं करते। परन्तु ब्रह्माकुमारियाँ, समय के गहर रहस्यों को जानते हुए बड़ी समझदारी से आत्मसंयम को अपनाते हुए मन को सुमन बनाती है या मन को अपना मित्र बनाती है। इसी तरह ब्रह्माकुमारी संस्था में जो भी संयम-नियम अपनाये जाते है वे समय की पुकार को समझते हुए जानी-जाननहार परमात्मा द्वारा समय के रहस्यों को स्पष्ट करते हुए विपरीत समय में भी सुरक्षित रहने की विधि बताती है। करना,न करना यह हर एक मनुष्य की समझ और शक्ति पर निर्भर करता है। लेकिन जो करेगा, सो पायेगा,सुरक्षित रहेगा। जो नहीं करेगा वो समय का शिकार बनेगा। समय बीत जाने के बाद फिर भगवान को दोष नहीं देना कि, हे प्रभु,आप तो जानी-जाननहार सब कुछ जानते थे फिर आपने हमे यह विधि बताई क्यों नहीं?

कई लोग यह सवाल उठाते है कि फिर यह दुनिया कैसे चलेगी? हमारे शास्त्रों में यह बात बताई गई है कि पाण्डवों और कौरवों की उत्पति मन्त्रों के बल से हुई थी,अर्थात् मंत्रों के बल से भी उत्पत्ति होती थी। इसी तरह पाण्डु, धृतराष्ट्र और विदुर की उत्पत्ति दृष्टि के बल से हुई थी अर्थात् दृष्टि के बल से उत्पत्ति होती थी। इसी तरह श्री राम की उत्पत्ति यज्ञ के बल से हुई थी। श्रीकृष्ण जिसको योगेश्वर कहते है, उसकी उत्पत्ति भी पवित्र विधि-'योगबल' से हुई इसीलिए तो उनको परम पवित्र मानते है। ऐसी पवित्र विधि से जिसकी उत्पत्ति हुई तो वह कितनी श्रेष्ठ और परम पवित्र आत्मा होगी। समय इस बात का साक्षी है कि संसार में समय प्रति समय उत्पत्ति की विधि बदलती रहती है। ये तो कलियुग में मनुष्य के पास आत्म शक्ति नहीं रही तो भोगबल उत्पत्ति का एक माध्यम बन गया। बाकी इस कालचक्र में सदाकाल से भोगबल से उत्पत्ति नहीं हुई है।

आज से दो हजार साल पहले ईशु का जन्म कैसे हुआ था? अगर कुमारी मेरी,बिना किसी भोगबल के ईशु को जन्म दे सकती है,उसको किसी ने भ्रष्ट आचार नहीं कहा। मदर मेरी के रूप में आज भी उन्हें पूजा जाता है, सिर्फ दो हजार साल पहले की बात है, अर्थात् दो हजार साल पहले भी पवित्र विधि से उत्पत्ति होती थी। परमात्मा के पास आने वाली सतयुगी दुनिया के लिए भी बहुत सुन्दर,श्रेष्ठ और पवित्र उत्पत्ति का रहस्य है। जिसकी कल्पना करना आज के मनुष्य की समझ की क्षमता के बाहर है इसीलिए मनुष्य प्रश्न करता है कि क्या सबूत है कि पवित्र विधि से भी उत्पत्ति होती है? भगवान जानता था कि कलियुगी मनुष्य हर बात में सबूत जरूर मांगेंगे तभी प्रकृति में मोर पक्षी को रखा है, जो आज भी पवित्र विधि से उत्पत्ति करता है, इसीलिए श्रीकृष्ण के ताज में मोर का पंख सुशोभित है,यह कोई ताज की डेकोरेशन के लिए नहीं है परन्तु जैसे श्रीकृष्ण परम पवित्र हैं इसी तरह यह पक्षी भी पूरे पाँच हजार वर्ष तक पवित्र है इसीलिये श्रीकृष्ण ने मोर का पंख अपने ताज में लगाकर उन्हें सम्मान दिया है।

वर्तमान समय में विज्ञान भी इस को पुष्टि करने लगा है कि नारी अपने आप में परमात्मा की पूर्ण रचना है जो अपने आप में उत्पत्ति कर सकती है।

विज्ञान के अनुसंधान से यह पता चला है कि नारी के 'बोन मेरो' में बीज उत्पन करने की क्षमता है। उन्हें किसी सम्भोग की आवश्यकता नहीं है। जैसे दो हजार साल पहले कुमारी ने मदर मेरी बन जीसस को जन्म दिया।

क्रमशः...

सार समाचार

राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से जीवन बनता है शक्तिशाली: डॉ. हंसा

ग्रुप के साथ ह्यूस्टन की निदेशिका बीके डॉ. हंसा।

शिव आमंत्रण > टेक्सास। टेक्सास के ह्यूस्टन में जैन विश्वभारती सेंटर में मेडिटेशन सेशन कन्डक्ट करने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किया गया। ह्यूस्टन की निदेशिका बीके डॉ. हंसा ने सभी को आत्मा, एक निराकार परमात्मा और सृष्टि के रियल इतिहास, भूगोल, खगोल का परिचय दिया। साथ में राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास को बता कर सबके अंदर आंतरिक गुणों का गहन अनुभव कराया। हमेशा सकारात्मकता को अपने जीवन में अपनाने पर जोर दिया। काम, क्रोध जैसे हिंसा से मुक्त होने पर भी विशेष रूप से सबका ध्यान आकृष्ट किया। लोगों को संपूर्णता के प्रति भी जागरूक कर शांति का अहसास कराया गया। इस कार्यक्रम का लाभ जैन नन्स ने भी लिया।

मेलबोर्न में आयोजित रिट्रीट में लिया राजयोग मेडिटेशन का दिया प्रशिक्षण, विधि सीखी

रिट्रीट में शामिल विविध देशों के सदस्य।

शिव आमंत्रण > मेलबर्न। 2019 अंतर्राष्ट्रीय आईटी रिट्रीट ऑस्ट्रेलिया में आयोजित की गई जिसमें लगभग 25 बीके सदस्यों ने भाग लिया। कनाडा, कोलंबिया, भारत, हांगकांग, न्यूजीलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूके और ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न राज्यों से प्रतिभागी आए थे। मेलबर्न में रिट्रीट की शुरुआत बैक्सटर के पेनिनसुला रिट्रीट सेंटर में हुई, जिसमें बीके सिस्टर जैकी और टीम बैक्सटर द्वारा सभी प्रतिभागियों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

आध्यात्मिक रीति-रिवाजों के साथ मना क्रिसमस का त्योहार, राजयोग पर चर्चा

क्रिसमस के दिन एक दूसरे को फरिश्ता रूप का साक्षात्कार

शिव आमंत्रण > मकाती। फिलीपींस के मकाती में ब्रह्माकुमारिज केंद्र में क्रिसमस का त्योहार बहुत ही उमंग-उत्साह के साथ मनाया गया। विभिन्न गतिविधियों के साथ, बीके सदस्यों ने शाम का आनंद लिया और अपने जीवन में शांति, प्रेम और धैर्य जैसे आध्यात्मिक गुणों को आत्मसात करने की शपथ ली। उसमें फरिश्ते का साक्षात्कार एक दुसरे करने का भी एक कार्यक्रम था। जापान और फिलीपींस में ब्रह्माकुमारिज की समन्वयक बीके रजनी ने उनका साथ निभाया।

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2018
Posted at Shantivan P.O. Dt. 18 to 20 of Each Month

ब्रह्माकुमारीज़ ओर से बीके जयंती ने किया संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित

संयुक्त राष्ट्र के जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में मानसिक प्रदूषण रोकने पर की चर्चा

कॉप -25: बीके जयंती ने दिया जलवायु और पर्यावरण बचाने का संदेश

जलवायु सम्मेलन में सभा को संबोधित करते बीके जयंती एवं बीके गोलो।

शिव आमंत्रण > मैड्रिड। 2019 संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन, जिसे कोप 25 के रूप में भी जाना जाता है, 25 वां संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन है। यह चिली सरकार की अध्यक्षता में इस वर्ष मैड्रिड, स्पेन में आयोजित किया गया। सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन की मीट, क्योटो प्रोटोकॉल की 15 वीं बैठक और पेरिस एग्रीमेंट की दूसरी बैठक शामिल थी। हर वर्ष की तरह ब्रह्माकुमारीज़ ने भी अपनी सहभागिता देकर पर्यावरण संरक्षण पर विचार विमर्श किया। इस सम्मेलन के दौरान आयोजित विविध सेशन्स, वर्कशॉप्स में मिडिल ईस्ट एवं यूरोपियन कन्ट्रीज में ब्रह्माकुमारीज की डायरेक्टर बीके जयंती, मोडरेटर बीके सोजा, संस्थान के एनजी एडवाइजर गोलो पिल्ज समेत बीके सदस्यों ने भाग लिया। सम्मेलन से पूर्व मैड्रिड के सेवाकेंद्र पर सभी प्रतिभागियों के लिए गेट टुगेदर एवं मेडिटेशन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

परमात्म शक्ति से सब संभव: वेदांती

सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स अवार्ड कार्यक्रम में उपस्थित बीके वेदांती।

शिव आमंत्रण > केन्या। द नेशनल एनजीओज, सीएसओज कांफ्रेन्स एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स अवार्ड 2019 का केन्या के नैरोबी में आयोजन किया गया जिसमें अफ्रीका में ब्रह्माकुमारीज की रीजनल कोर्डिनेटर बीके वेदांती और वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके दीपी ने संस्था का प्रतिनिधित्व किया। साथ ही संस्थान द्वारा अफ्रीका में की गई सेवाओं की जानकारी भी दी। मौके पर बीके वेदांती ने बताया, कि लोग कोई भी प्रोजेक्ट लेते है तो पहले प्रोजेक्ट को पैसा कितना लगेगा इसके बारे में सोचते है। हम वह बात महत्वपूर्ण नही मानते। हम यह सोचते है कि मै एक शांतस्वरूप आत्मा हूं और भगवान से ब्लेसिंग लेते है तो भगवान बारीश की तरह पैसों की वर्षा करता है। केनया में मै 45 बरसों से हूं लेकिन कभी भी हमारा एक भी प्रोजेक्ट फेल नहीं गया। परमात्म शक्ति से सब संभव है।

क्रिसमस पर नृत्य नाटिका से दिया आध्यात्म का संदेश

द स्नो क्वीन नृत्य नाटिका प्रस्तुत करते कलाकार।

शिव आमंत्रण > लंदन। लेस्टर के हार्मनी हाउस में क्रिसमस सेलिब्रेशन पर द स्नो क्वीन प्रोग्राम आर्गनाइज किया गया। जिसमें बड़े ही सुंदर तरीके से नृत्य नाटिका के जरिए पर्व के आध्यात्मिक रहस्यों से लोगों को अवगत कराया गया। इस अवसर पर हार्मनी हाउस सेवाकेंद्र प्रभारी बीके इंदु ने सभी को खुशहाल, सुखमय जीवन जीने की शुभकामनाएं दी और पर्व का आध्यात्मिक अर्थ बताया।

संदेश | बीके वेदांती ने बताए व्यवहार कुशलता और राजयोग के गुर

रिट्रीट में 30 से ज्यादा देशों के एंबेसेडर हुए शामिल, बोले- जीवन में आध्यात्म जरूरी है

30 से अधिक देशों से आए प्रतिभागियों के साथ बीके वेदांती।

शिव आमंत्रण > नैरोबी। केन्या की राजधानी नैरोबी के अफ्रिका रिट्रीट सेंटर पर डिप्लोमेटिक कार्प्स के लिए रिट्रीट आयोजित किया गया था। जिसमें बेल्जियम, झेक रिपब्लिक, इंडिया, इंडोनेशिया, मारीशस, ट्युनेशिया, यु न, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, थाईलैंड, फीलिपिन्स, स्वीडन, सोमालिया, इराक, टर्की, सर्बिया, बेलारूस और रशिया के डिप्लोमेट्स शामिल हुए। इंडियन हाई कमिश्नर राहुल छाबरा और उनकी धर्मपत्नी कविता छाबरा के प्रयासों से आयोजित इस रिट्रीट में 30 अम्बेसडर्स अपनी फैमली के साथ शामिल हुए। उनका भव्य रूप से स्वागत हुआ। इसके पश्चात अफ्रिका की निदेशिका बीके वेदान्ती ने सभी को कुछ देर मेडिटेशन कराया। साथ ही ट्रस्टी डॉ. हसमुख दावड़ा ने सभी मेहमानों को ब्रह्माकुमारीज संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी और अफ्रिका रिट्रीट सेंटर का अवलोकन करने के लिए धन्यवाद दिया। लंच के पश्चात बीके वेदान्ती ने सभी को गॉडली गिफ्ट प्रदान किए। विजिट पर आए मेहमान ऐसे फीडबैक में सभी ने शांति और प्यार का अनुभव बताया। सभी सहभागियों ने गहरी आंतरिक शांति का अनुभव किया और स्वयं को भगवान के बहुत करीब महसूस किया। भोजन साधारण था लेकिन मिठास से भरा था। इस जगह पर स्वच्छता और आध्यात्मिक शक्ति का अनुभव होता है।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की महिमा करते हुए सबने राजयोग सीखने की इच्छा जताई

प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. सोल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित ● सलाहकार संपादक: प्रो. कमल दीक्षित ● संपादक: ब्र.कु. कोमल ● संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ● RNI No.: RJHIN/2013/53539